ऋषि प्रसाद

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

द्विमासिक वर्ष : २

नवम्बर-दिसम्बर १९९१

अंक : ३

पूज्यपाद आसारामजी बापू

ऋषि प्रसाद

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

वर्ष : १

अंक : ३

नवम्बर - दिसम्बर १९९१

तंत्री : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रु. २२

त्रिवार्षिक : रु. ६०

विदेश में वार्षिक : US $ २२ (डालर)

त्रिवार्षिक : US $ ६० (डालर)

* कार्यालय *

'ऋषि प्रसाद'

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

संत श्री आसारामजी आश्रम

साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५.

फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

विदेश में शुल्क भरने का पता :

International Yog Vedant Seva Samiti
8, Williams Crest,
Park Ridge, N.j. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईपसेटींग : फोटोटेक्स्ट, अहमदाबाद।

प्रकाशक तथा मुद्रक : श्री के. आर. पटेल, श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, मोटेरा, अहमदाबाद-३८० ००५ ने अंकुर ऑफसेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में छापकर प्रकाशित किया।

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं दिनांक तक प्रकाशित होता है।

नूतन वर्ष के अभिनव अभिनंदन ... !

'ऋषि प्रसाद' के सभी वाचकों के हृदय में हृदयेश्वर का प्रकाश जगमगाता रहे...

बाहर तो अनेक दीपकों की शृंखला की। इतने दीपक जलाये कि रात्रि दिन के समान उज्ज्वल प्रतीत होने लगी... किन्तु हृदय में दीप न जला तो? हृदय में अमावास्या का अंधकार रहा तो? बाहर के सभी प्रयत्न व्यर्थ परिश्रम... यह पानी बिलोकर घी निकालना ही समझेंगे न?

अतः हे 'ऋषि प्रसाद' के वाचकों ! आप किसी भी कीमत पर, किसी भी पुरुषार्थ का अनुष्ठान करके इस आंतर ज्योति को जगाने की दिशा में लग जायँ। 'या होम करीने पड़ो फतेह छे आगे...' इस उक्ति को चरितार्थ कर लें। दूसरी सभी दिशाओं में प्रगति हो या न हो; किन्तु आंतर दिशा में तो प्रकाश अवश्य फैलाना।

'ऋषि प्रसाद' की वेदमंजरी की सुगन्ध है कि द्वेष से मुक्त होकर हम परमात्मा के रास्ते पर प्रयाण करें... करने की, मानने की तथा जानने की शक्ति का श्रेष्ठ उपयोग करें।

अपने कर्त्तव्य कर्म से परमात्मा की उत्कट पूजा करें - यह तापी नदी के किनारे पर दिया हुआ गुरुदेव का उपदेश है।

'पाँच दिन में आठ बार मरे हुए जीवित मानव की मुलाकात' यह गुरु-श्रद्धा, ईश्वर-निष्ठा तथा समर्पण के बल से इलेक्ट्रोनिक युग के डॉक्टरों को आह्वान देनेवाली ध्यान तथा प्रार्थना की शक्ति का परिचय देती है।

'श्रीकृष्ण का अवतार रहस्य' यह पूज्यश्री की अपनी, बहुआयामी समीक्षा तथा हृदय के तार को झनझनानेवाली प्रेरक वाणी 'ऋषि प्रसाद' का पीठबल है।

'अपने हाथ में ही अपना स्वास्थ्य' के द्वारा ज्ञात होता है कि आरोग्य विषयक सामान्य ध्यान दीर्घायुष्य और तंदुरुस्ती देता है।

इस प्रकार छोटी बड़ी विविध रंगी बातें 'ऋषि प्रसाद' के पाठकों को ज्ञान-ध्यान में प्रोत्साहन देंगी।

नूतन वर्ष में सभी उत्कृष्ट आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करें। ईश्वर और गुरुदेव के दैवी कार्य में तनमन के सुसंयोग से जुड़कर मुहल्ले मुहल्ले, नगर नगर में ईश्वरीय प्रसाद बाँटें। सभी के अन्तर में परमात्म-प्रसाद, ऋषि प्रसाद पीने की तथा पिलाने की जिज्ञासा प्रज्ज्वलित हो तो पृथ्वी स्वर्ग तो क्या वैकुण्ठ से भी अधिक पुण्यप्रद तथा मधुर बन जाय।

सबका नया वर्ष परहितपरायणता, संयम, सदाचार, निष्कामता, प्रभुप्रेम, अहंत्याग - साथ साथ सेवा तथा अनेक गाँवों के परिचय में आनेवाले प्रत्येक के दिल में दिलबर का आनंद प्रकट कराने का उत्साह... ऐसे दैवी सद्गुणों के प्रकाश में बीते ... यही अभ्यर्थना। *

यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत।
स नः पर्षदति द्विषः॥

'इस रजोगुण से परे जो यह शुद्ध तेज़ स्वरूप परमात्मा प्रकट हुआ है वह हमें द्वेष वृत्तियों से पार करें।'

[ऋग्वेद १०.१८७.५]

व्यष्टि और समष्टि का मेल गुणों के कारण डिगमगा जाता है। यह त्रिगुणमयी माया व्यष्टि (जीवात्मा) को समष्टि (परमात्मा) से मिलने में बाधा डालती है। परंतु भगवान श्रीकृष्ण का वचन है :

'ममैवांशो जीवलोके
जीवभूतः सनातनः।'

जीवात्मा परमात्मा की ही सनातन अंश है। अंश अंशी से भिन्न नहीं होता। जो परमात्मा की जाति है वही जीवात्मा की जाति है।

मानव तुझे नहीं याद क्या तू ब्रह्म का ही अंश है।
कुल गोत्र तेरा ब्रह्म है सद्ब्रह्म का तू वंश है॥

परमात्मा से इतनी घनिष्ठ एकता होते हुए भी मनुष्य दर दर की ठोकरें खाता है। अपने निज स्वरूप में तन्मय नहीं हो पाता। उसका कारण गुणों का संग ही है। तमोगुण तो घोर प्रमाद, आलस्य और जड़ता का कारण है। जगत को शून्यता की ओर ले जानेवाला है। रजोगुण इस संसार को क्रियाशील रखनेवाला है और साथ ही में लोभ, मोह, राग-द्वेष, सुख-दुःख, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वों से युक्त है।

कभी मनुष्य तमोगुण में आबद्ध होकर प्रमाद में गिरता है। कभी रजोगुण में एक तान होकर प्रवृत्ति परायण होकर भोगों में फँस कर उछल कूद मचाता है और कभी सत्त्वगुण से प्रभावित होकर निवृत्तिपरायण होकर चिरस्थायी शांति की ओर अग्रसर होता है।

रजो-तमो गुण के मिश्रण से कभी तो प्रवृत्ति-परायणता में, कभी हिंसा में, कभी आलस्य-निंद्रा में तो कभी शोक, मोह और राग-द्वेष के चक्करों में फिरता रहता है।

जिस मनुष्य के चित्त में द्वेष अपना साम्राज्य फैलाता है वह मृदु से कठोर हो जाता है। न्याय की आकांक्षा होते हुए भी खुद अन्याय का आचरण करता है। धर्मभीरु धर्मभंजक बन जाता है। शांति का पुजारी अशांति में आनंद का उपभोग करने लग जाता है। अपनी अंदर की चाह से बिलकुल विपरीत प्रवृत्ति करने लगता है। इनसे मुक्ति पाने के लिए रजो-तमोगुण से परे जो शुद्ध सत्त्व स्वरूप, अग्नि सदृश पावन, महान से महान और निर्मल ज्योति परमात्मा है उसकी शरण ग्रहण करें। वह ज्योतियों की ज्योति, सब का प्रकाशक, सब का

आधार परमात्मा हमें द्वेष से ऊपर उठायें।

हमें उससे विमुक्त कराकर द्वंद्वातीत आनंद में स्थिर करें। राग-द्वेष से हमारे अंतःकरण की योग्यताएं क्षीण होती हैं। हमें उनसे विमुक्त कराकर सत्य स्वरूप में, चित्स्वरूप में, आनंदस्वरूप में हे प्राणाधार परमात्मा ! हमें स्थित करो। सच्चिदानंद स्वरूप अपने आप को भूलकर हमने बहुत दुःख उठाये हैं। हमने बहुत चोटें खायी हैं। अब हमें अनुपम, अपूर्व शांति का उपभोग करना है।

हे निर्मल शुद्ध स्वरूप परमात्मा ! हमारे अंतर में तुम्हारा ज्ञान प्रकाश हो। बाहर हम उसी प्रकाश में चलते रहें और शीघ्रातिशीघ्र तुम्हारे नकट हो जाएं। अपना, समाज का, राष्ट्र का और विश्व का कल्याण हो और सर्व का सर्वांगीण विकास हो, ऐसी प्रेरणा, शक्ति और करुणा बरसाना।

*

अच्छी दिवाली हमारी

सभी इन्द्रियों में हुई रोशनी है
यथा वस्तु है सो तथा भासती है।
विकारी जगत ब्रह्म है निर्विकारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ १ ॥

दिया दर्श ब्रह्मा जगत् सृष्टि करता
भवानी सदा शंभु ओ विघ्न हर्ता।
महा विष्णु चिन्मूर्ति लक्ष्मी पधारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ २ ॥

दिवाला सदा ही निकाला किया मैं
जहाँ पे गया हारता ही रहा मैं।
गई हार है आज आदत विकारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ ३ ॥

लगा दाव पे नारि शब्दादि देते
कमाया हुआ द्रव्य थे जीत लेते।
मुझे जीत के वे बनाते भिकारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ ४ ॥

गुरु का दिया मंत्र मैं आज पाया
उसी मंत्र से ज्वारियों को हराया।
लगा दांव वैराग्य ली जीत नारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ ५ ॥

सलोनी सुहानी रसीली मिठाई
वशिष्ठादि हलवाइयों की है बनाई।
उसे खाय तृष्णा दुराशा निवारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ ६ ॥

हुई तृप्ति संतुष्टता पुष्टता भी
मिटी तुच्छता दुःखिता दीनता भी।
मिटे ताप तीनों हुआ मैं सुखारी
मनी आज अच्छी दिवाली हमारी ॥ ७ ॥

करे वास भोला ! जहाँ ब्रह्म विद्या
वहाँ आ सके ना अंधेरी अविद्या।
मनावें सभी नित्य ऐसी दिवाली
हमारी मनी आज जैसी दिवाली ॥ ८ ॥

पूज्यश्री का दीपावलि-सन्देश

हिंमत करो। घृणा, द्वेष और निर्बलता के विचारों को अपने चित्त में फटकने मत दो। हमेशा सब के लिए मंगलकारी भावना करो।

हे मंगलमूर्ति मानव! तेरा परम मंगलस्वरूप प्रकट कर। तेरा हर श्वास दिवाली है। तेरी जहाँ निगाह पड़े वहाँ दिव्य आत्मसुख की मस्ती बनी रहे।

दिवाली के शुभ पर्व पर ही शुभ संदेश है कि तुम ऊँचे से ऊँचे, महान से महान व्यक्ति को और छोटे से छोटे नन्हे व्यक्ति को जब निहारो तब उनकी गहराई में, महान में और छोटे में तुम ही आत्मरूप से बैठे हो ऐसी अनुभूति प्रकट हो। बाह्य भेदभाव और छोटे मोटे कर्म स्वप्न की नाईं हैं।

वैदिक ज्ञान का अमृतपान करने के लिए अपने व्यवहारकाल में दिव्य चिंतन, साधनाकाल में दिव्य अनुभूति और विचारकाल में दिव्यातिदिव्य स्वरूप के साथ एकत्व का अनुभव करो।

समुद्र-मंथन के समय जब तक अमृत नहीं मिला तब तक देवता लोग न तो अमूल्य रत्नों को पाकर संतुष्ट हुए और न भयानक जहर से ही डरे। समुद्र-मंथन में लगे ही रहे। आखिर उन्होंने अमृत पा ही लिया।

ऐसे ही हे मानव! संसार की छोटी मोटी सफलताओं में और सुखद परिस्थितियों में नहीं रुकना। विफलता और सफलता इन दोनों के सिर पर पैर रखकर तू अपने आत्मपद पर स्थिर रह।

शाबाश वीर! शाबाश! हिंमत कर! साहस जुटा। धैर्य और सावधानी से आगे बढ़। तेरे जीवन की हज़ार हज़ार सफलताएं भी तुझे कुछ समझा गई होंगी। इन सबका सार यही है कि आने-जानेवाली सफलता और विफलता के पार कोई ऐसा तत्त्व है, ऐसी कोई चीज है कि जहाँ न मृत्यु का भय है, न जन्म का बन्धन है, न प्रकृति का प्रभाव है और न अपने परमेश्वर स्वरूप से दूरी है। ऐसे शाश्वत, सनातन स्वरूप को अवश्य पा ले जान ले और जीते जी मुक्त हो जा। दूसरों के लिए भी मुक्ति का मार्ग सरल बनाये जा।

हे साधक! देर सबेर तू यह कर लेगा। इस महान लक्ष्य को बार-बार दुहराता जा कि न प्रलोभनों में फँसेंगे, न विघ्नों से डरेंगे। अवश्य आत्म-साक्षात्कार करेंगे।

वह होगा... होगा... और होगा।

तेरे लिए दिवाली का यह दिव्य संदेश पर्याप्त है। इस मार्ग पर कदम रखनेवाला धन-धान्य, पुत्र-परिवार और सुख-समृद्धि को अगर चाहे तो सहज में ही प्राप्त कर लेता है। अगर विरक्त है तो उसे कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती।

वीर्यवान बनो। संयमी और सदाचारी जीवन जियो। दिवाली की परम दिव्यता अपने दिल में जगाओ।

हम तो यह चाहते हैं कि तुम जहाँ कदम रखो वहाँ का वातावरण भी दिव्य बनने लग जाय। ऐसा अपना दिव्य तत्त्व प्रकटाओ।

ॐ आनंद! आनंद! सचमुच में आनंद! ब्रह्मानंद! परमानंद! ईश्वरीय आनंद!

हे ईश्वर के सनातन अंश! अपने सनातन स्वरूप को जगाओ। सनातन सुख को पाओ।

*

तापी के तीर
कर्त्तव्यनिष्ठा के प्रेरक उद्गार

डपूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज.

[सूर्यपुत्री तापी नदी अपने निर्मल प्रवाह में गूंजती हुई बह रही है। हवाओं का संगीत एवं पानी की हल्की तरंगों का ताल बड़ी अद्भुत मनोहारी दिव्यता फैलाता है। नदीतट पर हरी घास की कालीन कुदरत ने बिछायी है। उस पर बिछात सजा कर पूज्य गुरुदेव की व्यासपीठ के सामने साधक, भक्त-समुदाय हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ... की गूँज में पुण्यार्जन कर रहा है। ठीक साढ़े पाँच बजे पूज्यश्री पदार्पण करते हैं और धीर-गंभीर, कर्त्तव्यनिष्ठा की राह प्रशस्त करनेवाली अमृतवर्षा की बौछार शुरु होती है...]

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥

'जिससे संपूर्ण भूतों की उत्पत्ति हुई है और जिसके द्वारा यह सब व्याप्त है, अपने कर्मों के द्वारा उस परमेश्वर की पूजा करने पर मनुष्य सिद्धि प्राप्त कर लेता है।'

[भगवद्गीता : १८.४६]

मनुष्य में कर्म करने की शक्ति तो विपुल है मगर कर्म करने का तरीका वह नहीं जानता तो फिर उन कर्मों के द्वारा बँध जाता है। हमें कर्म करने का सही तरीका अगर आ जाय तो कर्म के द्वारा हम मुक्त हो सकते हैं।

विद्युत का हम सदुपयोग करते हैं तो प्रकाश, पंखा, फ्रीज, लीफ्ट आदि से हमारा दैनिक व्यवहार चलता है। मगर गलती से कहीं प्लग में ऊँगली डाल दें तो वह मृत्यु दे सकती है।

जीवन में करने की, मानने की और जानने की शक्ति सब के पास है। कर्म अगर उचित हो तो आदमी उसी कर्म से परमेश्वर की पूजा करके मुक्त हो सकता है। मानने की शक्ति का सदुपयोग हो तो मन जहाँ से सारी मान्यताएं लाता है उस परमेश्वर में विश्रांति मिल जाय। जानने की शक्ति का सदुपयोग हो तो ऐसे तत्त्व को जान सकते हैं, जिसे जानने के बाद और कुछ जानना शेष नहीं रह जाय।

जो पूरे दिल से काम नहीं करता वह पूरे दिल से ध्यान भी नहीं कर सकता। जो करो वह पूरा करो। जो कर्म में पूरा उतर आता है उसका आत्मविकास होता है, योग्यताओं का विकास होता है।

कर्म करें तो उस समय उत्साह हो और कर्म जिसके लिए करें उसके प्रति प्रेम हो। अगर प्रेम नहीं है तो कर्म बोझ बन जायेगा। अगर प्रेम है तो कर्म पूजा बन जाता

है। कर्म में ऐसा उत्साह हो, ऐसी कुशलता हो कि कर्म करते वक्त आप कर्म ही बन जायँ। टूटे, रुखे मन से नहीं, जो काम करें पूरे दिल से करें। जो पूरे दिल से काम नहीं करता वह पूरे दिल से ध्यान भी नहीं कर सकता। जो करो वह पूरा करो। भगवान को प्यार करो, उसका ध्यान करो तो पूरा करो, अपने आप को बचाकर नहीं। जो कर्म में पूरा उतर आता है उसका आत्मविकास होता है, योग्यताओं का विकास होता है। जो टूटे-फूटे दिल से कर्म करता है उसको कर्म करने का रस नहीं आता, आनंद नहीं आता और उसका कर्म पूजा नहीं बन पाता अपितु बंधन बन जाता है, बोझ बन जाता है।

जो समाज और लोग निस्तेज हैं वे कर्म में रुचि नहीं रखते और जिनके लिए कर्म करते हैं उनके लिए प्रेम नहीं रखते। इसलिए वह व्यक्ति और समाज निस्तेज रहते हैं। उनके जीवन में रस नहीं होता। जीवन में संगीत नहीं गूंजता और जीवन शुष्क हो जाता है।

उत्कृष्ट कर्म करने की कूँजी यह है कि कर्म करने की रुचि हो। जिसके लिए कर्म कर रहे हो उसके प्रति प्रेम हो और कर्म के फल को तुच्छ विकारों में नाश न करके अविनाशी आत्मा की जागृति हो, जीवन ऊर्ध्वगामी हो। कर्म-फल की लोलुपता हृदय को कुंठित न करे यह सावधानी रहे तो कर्म आत्मसिद्धि देनेवाला होता है। उससे बढ़कर और कोई उपलब्धि नहीं है।

अगर तुम विश्वंभर के काम आओगे तो वह विश्वंभर तुम्हें अपने दिल में रखेगा।

समाज के तेजस्वी होने और न होने में यही कारण है। जो समाज और लोग निस्तेज हैं वे कर्म में रुचि नहीं रखते और जिनके लिए कर्म करते हैं उनके लिए प्रेम नहीं रखते। इसलिए वह व्यक्ति और समाज निस्तेज रहते हैं। उनके जीवन में रस नहीं होता। जीवन में संगीत नहीं गूंजता और जीवन शुष्क हो जाता है।

कबीरजी ताना बुनते हैं मगर इतने प्रेम से बुनते हैं कि मानो वे पूजा कर रहे हैं। राम के लिए ही रूई खरीदते हैं, राम के लिए ही धागा बनाते हैं और राम के लिए ही कपड़ा बुनते हैं। वे जब बाजार में जाते हैं तो लोग हैरान हो जाते हैं कि इतना बढ़िया कपड़ा !

"हम इसे देख सकते हैं ?"

कबीरजी कहते हैं : "हाँ राम ! तुम्हारे लिए ही मैंने बनाया है।"

"यह तो बहुत महेंगा होगा ?"

"नहीं राम, आप पहन सकें ऐसा होगा।"

कबीरजी कम से कम मुनाफा रखते हैं और जिसके लिए कपड़ा बुनते उन ग्राहकों में राम को निहारते हैं। कबीरजी कर्म करते हुए मुक्ति का अनुभव करते हैं।

माता लोई रसोई बनाती हैं तो केवल कबीरजी के लिए ही नहीं अपितु जो उनके दर्शन एवं सत्संग के लिए आते उनके लिए भी बनाती हैं। सर्व में प्रभु को मानती हुई रसोई बनाती इसीलिए उनके मन को थकान नहीं होती।

नामदेवजी के पास जनाबाई काम करती थी। नामदेवजी के यहाँ बहुत सारे साधु-संत आते थे। उनको भोजन कराते हुए दोपहर के तीन-चार बज जाते। स्वयं भूखे होते हुए भी उन्हें भोजन कराने में जो आनंद आता उसमें वे समाधि का सुख महसूस करती थी।

आप खाने में वह मजा नहीं जो औरों को खिलाने में है।

अपने दुःख में रोनेवाले मुस्कुराना सीख ले।
दूसरों के दुःख दर्द में आँसू बहाना सीख ले॥
जो खिलाने में मजा है आप खाने में नहीं।
जिंदगी में तू किसीके काम आना सीख ले॥

आज का मनुष्य चाहता है कि लोग तो हमें ज्यादा दें और हम बदले में कुछ न दें। सब चाहते हैं कि मुझसे कोई प्रेम करे। अरे ! प्रेम दूसरा कोई क्यों करे ? तू निर्दोष, निर्विकार प्रेम कर। तू आप प्रेमस्वरूप होगा तो तेरे संपर्क में आनेवाले का हृदयकमल खिल जायेगा। उसका मस्तक झुक जायेगा। साधारण आदमी और महापुरुषों में यही फर्क है। साधारण आदमी बदले की भावना से बात करेगा। परिणाम देखेगा कि क्या मिलेगा। मगर संत भगवंत यह नहीं देखते कि सामनेवाला क्या देगा। चार पैसे की चीज तुम जिसको दे रहे हो उसका तो उतना भला नहीं होता परंतु देने का जो सुख है, उदारता का सुख है और देने की जो आदत बनती है उससे तुम्हारे अंतःकरण का निर्माण होता है। कर्म करने का अपना आनंद होता है। जब कर्म में स्वार्थ होता है, अहंकार होता है या उबान होती है तब कर्म बोझिल बन जाता है। जब कर्म में कर्त्तव्य-बुद्धि होती है तब वही कर्म सिद्धि देनेवाला बन जाता है।

तुम किसीका भला करना चाहो तो तुम्हारी वस्तु से, सेवा से उसका भला हो चाहे न हो लेकिन भला करने की भावना से तुम्हारा हृदय तो भला हो ही जाता है।

गोरा कुम्हार ऐसे मटके बनाते थे कि पिता खरीदे उसमें पुत्र-पौत्र पानी पियें ऐसा मजबूत बनाते थे। 'जिसके लिए बना रहा हूँ वह रामजी है' ऐसा विचार कर मिट्टी रोंदते थे। घड़े को आँच भी कुशलता से देते कि बराबर पक जाय।

ग्राहक के लिए प्रीति रखेंगे तो आजीविका तो हो ही जायेगी अपितु जब तुम ग्राहक के रूप में परमेश्वर की सेवा करोगे तो तुम्हारी चिंता परमेश्वर जरूर करेगा। जब तुम किसीके काम आते हो, तुम्हारा तन, मन, जीवन और समय दूसरे के काम आयेगा तो लोग तुम पर सब कुछ न्यौच्छावर करेंगे। अगर तुम विश्वंभर के काम आओगे तो वह विश्वंभर तुम्हें अपने दिल में रखेगा।

ऐसा कौन-सा नौकर है जो सेठ के काम आता हो और उसे रहने की जगह न मिले, रोटी न मिले, कपड़ा न मिले? परंतु जो नौकर सेठ के घर रह कर अपने ही लिए चिंतित रहे, सेठ के काम के लिए रुचि न रखे, सेठ के प्रति प्रीति न रखे वह सेठ का कृपाभाजन नहीं हो पाता। ऐसे ही सेठों का सेठ जो परमात्मा है उसके घर को याने संसार को सजाये, सँवारे और मधुर बनाये तो वह अपने हृदय को पहले ही मधुर बना लेता है।

तुम किसीका भला करना चाहो तो तुम्हारी वस्तु से, सेवा से उसका भला हो चाहे न हो लेकिन भला करने की भावना से तुम्हारा हृदय तो भला हो ही जाता है। सत्कर्म करने से, जप, तप, सेवा और स्मरण करने से हृदय पावन होता है। आवश्यकताएं कम हो जाती हैं। सुख के लिए बाहर के साधन इकट्ठे नहीं करने पड़ते। ऐसे महानुभाव का हृदय स्वयं सुखरूप होने लगता है। वह स्वयं सुख शांति का भंडार हो जाता है। वह भंडार भी चलता-फिरता, लटके करता हुआ ब्रह्म। ऐसे महापुरुष जहाँ जाते हैं वहाँ सुख शांति के दिव्य परमाणु फैलते हैं और पुण्यात्मा उनका प्रसाद पा लेते हैं।

जो काम करें तत्परता से करें। भोजन बनायें तो ठाकुरजी के लिए बना रहे हैं ऐसा भाव रहे। जिनके लिए बना रहे हो उनके लिए प्रीति होगी तो भोजन बढ़िया बनेगा।

गोरा कुम्हार जब मटका बनाते थे तब ऐसा कभी नहीं सोचते थे कि मटका जल्दी टूटे और ग्राहक दूसरा खरीदे। वे तो ऐसा बनाते कि बाप का खरीदा हुआ मटका बेटे के घर भी काम आता रहे।

*

श्रीकृष्ण-जन्म ... अवतार-रहस्य

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज

[जन्माष्टमी के पावन पर्व पर सुरत के आश्रम में साधना शिविर का आयोजन हुआ है। जन्माष्टमी को मध्याह्न संध्या के समय आश्रम का विराट पंडाल सुरत की धर्मपरायण जनता और देश-विदेश से आये हुए भक्तों से खचा-खच भरा हुआ है। दांडीरास खेल किये गये। श्रीकृष्ण की बंसी बजायी गई। मटकीफोड कार्यक्रम की तैयारियाँ पूर्ण हो गई। सब आतुर आँखों से पूज्य बापू का इंतजार कर रहे हैं। ठीक पौने बारह बजे पूज्य बापू पधारे और उल्लास, उत्साह एवं आनंद की तरंगें पूरे पंडाल में छा गई। पूज्यश्री ने अपनी मनोहारिणी, प्रेम छलकती मंगलवाणी में श्रीकृष्ण-तत्त्व का अवतार-रहस्य प्रकट किया...]

जन्माष्टमी तुम्हारा आत्मिक सुख जगाने का, तुम्हारा आध्यात्मिक बल जगाने का पर्व है। तुम्हारा सुषुप्त प्रेम जगाने की दिव्य रात्रि है। जीव को श्रीकृष्ण-तत्त्व में सराबोर करने का त्यौहार है।

हे कृष्ण ! सच्चे व्यक्तियों की कीर्ति, शौर्य और हिंमत बढ़ाने व मार्गदर्शन करने के लिए शायद आप अवतरित हुए हैं। कुछ लोगों का मानना है कि जैसे मलयाचल में चंदन के वृक्ष अपनी सुगंध फैलाते हैं; वैसे ही अपने सोलह कला-संपन्न अवतार से आप यदुवंश की शोभा और आभा बढ़ाने के लिए अवतरित हुए हैं। कुछ लोग यूँ कहते हैं कि वसुदेव और देवकी की तपस्या से प्रसन्न होकर देवद्रोही दानवों के जुल्म दूर करने, भक्तों की भावना को तृप्त करने के लिए वसुदेवजी के यहाँ ईश्वर निर्गुण निराकार सगुण साकार होकर अवतरित हुए। लीला और लटकों के भूखे ग्वाल-गोपियों को प्रसन्न करके आनन्द का दान करने के लिए आप अवतरित हुए हैं। कुछ लोग यूँ भी कहते हैं कि पृथ्वी जब पापियों के भार से डूबी जा रही थी, जैसे नाव सागर में अधिक वजन लेकर चलने से डूब जाती है; ऐसे ही पृथ्वी ने पापियों के पाप प्रभाव से दुःखी हो, ब्रह्माजी की शरण ली और ब्रह्माजी ने आप की शरण ली। तब हे अनादि ! अच्युत् ! हे अनंत कलाओं के भंडार ! सोलह कलाओं सहित आप पृथ्वी पर प्रकट हुए। पृथ्वी का भार उतारने के लिए, शिशुपाल, कंस, शकुनि दुर्योधन जैसे दुर्जनों की समाजशोषक वृत्तियों को ठीक करने के लिए, उनको अपने कर्मों का फल चखाने के लिए और भक्तों की सच्चाई और स्नेह का फल देने के लिए हे अच्युत ! हे अनादि ! आप साकार अवतार लेकर प्रकट हुए। कुंताजी कहती हैं -

"हे भगवान् ! संसार के कुचक्र में बारंबार जन्म, मृत्यु और वासना के वेग में बह जानेवाले जीवों को निर्वासनिक तत्त्व का प्रसाद दिलाने के लिए लीला माधुर्य, रूप माधुर्य और उपदेश माधुर्य से जीव का अपना निज़ स्वरूप जो कि परम मधुर है, सुख स्वरूप है उस सुख स्वरूप का ज्ञान कराने के लिए, आत्म-प्रसाद देने के लिए और कामनाओं के कुचक्र

से संसार समुद्र में बह जानेवाले जीवों को तारने के लिए आपका अवतार हुआ है।"

अवतार किसको कहते हैं?

'अवतरति इति अवतारः ।'

जो ऊपर से नीचे आये उसे अवतार कहते हैं। जिसे कोई अपेक्षा नहीं और हजारों अपेक्षावाला दिखे, जिसे कोई कर्त्तव्य नहीं फिर भी भागा-भागा जाए। जीव भागे-भागे जा रहे हैं कर्म के बन्धन से और ईश्वर जब भाग-भागा जाए तो कर्म का बन्धन नहीं; ईश्वर की करुणा है। जीव कर्मों के बन्धन से, माया के वशीभूत होकर संसार में आता है, उसको जन्म कहते हैं। ईश्वर कर्म बंधन से नहीं, माया के वश नहीं अपितु माया को वश करता हुआ संसार में जीवों की नांईं ही आता है, जीता है, मक्खन माँगता है। भूख भी लगती है, वस्त्र भी चाहिए एवं घोड़ा भी चाहिए। माँ यशोदा का प्यार भी चाहिए और समाज के रीति-रिवाज के अनुसार चलना भी चाहिए। ये सब 'चाहिए... चाहिए' अपने सर पर लादकर तो चलता है, हालांकि उस पर कोई बन्धन नहीं। फिर भी चलता है, स्वीकार कर लेता है नट की नांईं! नट भीतर से तो सब जानता है फिर भी नाट्य नियमों के अनुसार भिखारी भी बन जाता है, राजा भी बन जाता है और कभी प्रजा के साथ साथी होकर भी देखा जाता है। परंतु अंदर अपने नटत्व भाव में ज्यों का त्यों जगा रहता है। ऐसे ही जिन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान, स्वरूप का बोध ज्यों का त्यों है फिर भी साधारण जीवों के बीच, साधारण जीवों की उन्नति, जागृति कराने के लिए जो अवतार हैं वे अवतार कृष्णावतार, रामावतार रूप से जाने जाते हैं।

"हे भगवान्! संसार के कुचक्र में बारंबार जन्म, मृत्यु और वासना के वेग में बह जानेवाले जीवों को निर्वासनिक तत्त्व का प्रसाद दिलाने के लिए लीला माधुर्य, रूप माधुर्य और उपदेश माधुर्य से जीव का अपना निज स्वरूप जो कि परम मधुर है, सुख स्वरूप है उस सुख स्वरूप का ज्ञान कराने के लिए, आत्म-प्रसाद देने के लिए और कामनाओं के कुचक्र से संसार समुद्र में बह जानेवाले जीवों को तारने के लिए आपका अवतार हुआ है।"

तपती दुपहरी में जो अवतार होता है, अशांत जीवों में शांति और मर्यादा की स्थापना करने के लिए जो अवतार होता है उसे रामावतार कहते हैं। समाज में जब शोषक लोग बढ़ गये, दीन-दुःखियों को सतानेवाले व चाणूर और मुष्टिक जैसे पहलवानों और दुर्जनों का पोषण करनेवाले क्रूर राजा बढ़ गये, समाज त्राहिमाम् पुकार उठा, सर्वत्र भय व आशंका का घोर अंधकार छा गया तब श्रावण मास में कृष्ण पक्ष की उस अंधकारमयी अष्टमी को कृष्णावतार हुआ। जिस दिन वह निर्गुण, निराकार, अच्युत, माया को वश करनेवाले, जीवमात्र के परम सुहृद प्रकट हुए वह आज का पावन दिन जन्माष्टमी कहलाता है। उसकी आप सब को बधाई हो।

आवेश अवतार, प्रवेश अवतार, प्रेरक अवतार, अंतर्यामी अवतार, साक्षी अवतार... ऐसे अनेक स्थानों पर अनेक बार भगवान के अवतार हुए हैं। एक अवतार अर्चना अवतार भी होता है। मूर्ति में भगवान की भावना करके पूजा की जाती है। वहाँ भगवान अपनी चेतना का अवतार प्रकट कर सकते हैं। श्रीनाथजी की मूर्ति के आगे वल्लभाचार्य दूध धरते हैं और वल्लभाचार्य के हाथ से भगवान दूध लेकर पीते हैं। नरो नामक अहिर की लड़की से भगवान ने अपने हाथों से दूध का प्याला ले लिया।

धन्ना जाट के आगे भगवान पत्थर की मूर्ति में से प्रकट हुए। यह आविर्भाव अवतार था। भगवान कभी भी, कहीं भी, किसी भी व्यक्ति के आगे, किसी भी अंतःकरण में, किसी भी मूर्ति में, किसी भी जगह पर अपने भक्तों को मार्गदर्शन दे करके उन्हें नित्यतत्त्व में ले

जाने के लिए सर्व समर्थ हैं। उनकी लीला अनादि है। जो अनंत, अनादि हैं वे सान्त व साकार जैसे होकर आते हैं और अलौकिक लीलाएँ करते हैं।

अवतार जैसे-तैसे, जहाँ-तहाँ प्रकट नहीं हो जाया करते। उनके पीछे बहुत कुछ परिश्रम व संकल्प होते हैं। असंख्य लोगों के अस्पष्ट और अनिर्णित पुरुषार्थ को सही दिशा देने के लिए जो महापुरुष या ईश्वरीय चेतना प्रकट होती है उसे हम अवतार कहकर पूजते हैं।

अवतार जैसे-तैसे, जहाँ-तहाँ प्रकट नहीं हो जाया करते। उनके पीछे बहुत कुछ परिश्रम व संकल्प होते हैं। असंख्य लोगों के अस्पष्ट और अनिर्णित पुरुषार्थ को सही दिशा देने के लिए जो महापुरुष या ईश्वरीय चेतना प्रकट होती है उसे हम अवतार कहकर पूजते हैं। जितना ज्यादा स्पष्ट पुरुषार्थ उतना ही महान अवतार प्रकट होता है।

रामजी को प्रकट करनेवाले दशरथ और कौशल्या ही नहीं अपितु और भी कई पुण्यात्माओं के संकल्प थे। बंदर और हनुमानजी आदि की माँग थी। भक्तों को स्पष्ट जीवन का मार्गदर्शन सुझाने की जब अत्यंत जरूरत पड़ी तब रामावतार हुआ। अवतार आने से पहले बहुत व्यवस्था होती है। अथाह पुरुषार्थ, अटल श्रद्धा, सतत प्रयास होते हैं और अपने पुरुषार्थ के बल पर नहीं, 'निर्बल के बल राम' ऐसा जब साधक के, समाज के चित्त में आ जाता है तब परमात्मा अपनी करुणामयी वृत्ति से, भावना से एवं स्वभाव से अवतरित होकर भक्तों को मार्गदर्शन देते हैं। समाज को उन्नत करने में अंगुलीनिर्देश करते हैं। गोवर्धन पर्वत उठाने के विषय में विद्वानों का मानना है कि जुल्मी राजाओं का जुल्म और समाज-शोषकों की अति भोग-लोलुपता इतनी बढ़ गई, समाज का शोषण इतना बढ़ गया कि श्रीकृष्ण को अंगुलीनिर्देश करना पड़ा कि इन्द्र की पूजा कब तक करोगे? अहंकारी और शोषण करनेवाले जो तुम से तुम्हारा धन-धान्य लिए जा रहे हैं, तुम्हारे जीवन के उत्कर्ष का ख्याल नहीं करते, तुम्हें जीवनदाता से मिलाने का पुरुषार्थ नहीं करते ऐसे कंस आदि लोगों से कब तक डरते रहोगे? अपने में साहस भरो और क्रांति लाओ। क्रांति के बाद शांति आयेगी। बिना क्रांति के शांति नहीं।

जर्मनी में युद्ध हुआ फिर जर्मनों में हिंमत आयी। जापानी भी युद्ध में नष्ट-भ्रष्ट हो गये, फिर उनमें नवजीवन की चेतना जागी और साहस आया। युद्ध और संघर्ष भी कभी-कभी सुषुप्त चेतना को जगाने का काम करते हैं। आलस्य और प्रमाद से तो युद्ध अच्छा है।

युद्ध करना तो रजोगुण है। ऐसे ही पड़े रहना तमोगुण है। तमोगुण से रजोगुण में आये और रजोगुण के बाद सत्त्वगुण में पहुँचे और सत्त्वगुणी आदमी गुणातीत हो जाये। प्रकृति में युद्ध की व्यवस्था भी है प्रेम की व्यवस्था भी है और साहस की व्यवस्था भी है। आपका सर्वांगीण विकास हो इसलिए काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं दुर्बलताओं से युद्ध करो। अपने चैतन्य आत्मा को परमात्मा से एकाकार कर दो।

यह कौन-सा उकदा जो हो नहीं सकता।
तेरा जी न चाहे तो हो नहीं सकता॥
छोटा-सा कीड़ा पत्थर में घर करे।
इन्सान क्या अपने दिले दिलबर में घर न करे?

भागवत में, गीता में, शास्त्रों में सच्चाई से भक्ति करनेवाले भक्तों का, योगसाधना करके योगसिद्धि पानेवाले योगियों का और आत्मविचार करके आत्मसिद्धि को पाये हुए ब्रह्मवेत्ताओं का वर्णन तो मिलता है लेकिन कलियुगी भगवानों की बात न गीता में, न भागवत में और न किसी पवित्र शास्त्रों में ही है।

भभूत, कुमकुम, अंगूठी आदि वस्तुएँ निकालनेवाले यक्षिणी-सिद्ध, भूतप्रेत-सिद्ध या टूंणा फूंणा की सिद्धिवाले हो सकते हैं। आत्म-साक्षात्कार करके सिद्ध तत्त्व का, स्वतः सिद्ध स्वरूप का अमृतपान करानेवाले रामतीर्थ, रमण महर्षि, नानक और कबीर जैसे संत, वसिष्ठ और सांदिपनी जैसे महापुरुष हैं जिनका भगवान राम और श्री कृष्ण भी शिष्यत्व स्वीकार करते हैं। अर्थात् जो भगवान

के भी गुरु हैं ऐसे ब्रह्मवेत्ता आत्म-सिद्धि को पाते हैं। उनकी नजरों में यक्षिणी, भूत या प्रेत की सिद्धि, हाथ में से कड़ा या कुंडल निकालने की सिद्धि नगण्य होती है। ऐसे सिद्धों का गीता, भागवत या अन्य ग्रंथों में भगवान रूप में कोई वर्णन नहीं मिलता और न ही उच्च कोटि के सिद्धों में ही उनकी गणना होती है। स्वयंभू बने हुए भगवानों की आज से बीस साल पहले तो कुंभ में भी भीड़ लगी थी। हाँ, उन महापुरुषों में कुछ मानसिक शक्ति या फिर भूतप्रेत की सिद्धि हो सकती है। मगर भभूत, कुमकुम या कड़ा-कुंडल ही जीवन का लक्ष्य नहीं है। आत्मशांति, परमात्म-साक्षात्कार ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। राग-द्वेष और जन्म-मरण से मुक्त होना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। श्रीकृष्ण ने युद्ध के मैदान में अर्जुन को वही आत्म-साक्षात्कार की विद्या दी थी। श्रीराम ने हनुमानजी को वही विद्या दी थी। भभूत, भूत-प्रेत या यक्षिणी सिद्धिवालों की अपेक्षा तो हनुमानजी और अर्जुन के पास ज्यादा योग्यताएँ थीं। ऐसे पुरुषों को भी आत्मज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। तो हे भोले मानव! तू इन कलियुगी भगवानों के प्रभाव में आकर अपने मुक्तिफल का, आत्मज्ञान का और आत्म-साक्षात्कार का अनादर न कर बैठना। किसीके प्रति द्वेष रखना तो अच्छा नहीं लेकिन किसी छोटे-मोटे चमत्कारों में आकर परमात्मज्ञान का रास्ता, आत्मज्ञान पाने की सुषुप्त जीवन-शक्तियाँ जगाने की आध्यात्मिक दिशा को भूलना नहीं। श्रीकृष्ण, श्रीराम, भगवान वेदव्यास और वसिष्ठजी महाराज ने, तुलसीदास जैसे संतों ने, रामकृष्ण और रमण महर्षि जैसे आत्मसिद्धों ने जो दिशा दी है वही साधक के लिए, समाज के लिए और देश के लिए हितकर है।

हे भोले मानव! तू इन कलियुगी भगवानों के प्रभाव में आकर अपने मुक्तिफल का, आत्मज्ञान का और आत्म-साक्षात्कार का अनादर न कर बैठना। किसी छोटे-मोटे चमत्कारों में आकर परमात्मज्ञान का रास्ता, आत्मज्ञान पाने की सुषुप्त जीवन-शक्तियाँ जगाने की आध्यात्मिक दिशा को भूलना नहीं।

जीवन में सच्ची दिशा होनी चाहिए। हम किसलिए आये हैं इसका सतत चिंतन करना चाहिए। आज के आदमी के पास कुछ स्पष्ट ध्येय नहीं है।

"पढ़ते क्यों हो ?"

"पास होने के लिए।"

"पास क्यों होना चाहते हो ?"

"नौकरी करने के लिए।"

"नौकरी क्यों करना चाहते हो ?"

"पैसे कमाने के लिए।"

"पैसे क्यों कमाना चाहते हो ?"

"खाने-पीने के लिए।"

"खाना-पीना क्यों चाहते हो ?"

"जीने के लिए।"

"और जीना क्यों चाहते हो ?"

"मरने के लिए।"

मरने के लिए इतनी मजदूरी की कोई आवश्यकता ही नहीं। हकीकत में यह सब गहराई में सुखी होने के लिए, आनंदित होने के लिए करते हैं। अतः परमानंद को ही पाने का ध्येय होना चाहिए।

कृष्ण उस पद में स्थित थे। द्वारिका डूब रही थी, कोई फिकर नहीं। छछीयन भरी छाछ के लिए नाच रहे हैं तो नाच रहे हैं, कोई परवाह नहीं। कुछ मिला तो भी वही मस्ती। सब छूट जाता है तो भी वही मस्ती... ।

पूरे हैं वे मर्द जो हर हाल में खुश हैं।
मिला अगर माल तो उस माल में खुश हैं॥
हो गये बेहाल तो उस हाल में खुश हैं॥

श्रीकृष्ण को नंगे पैर भागना पड़ा तो धोती के टुकड़े बाँधकर भागे जा रहे हैं। छः महीने गिरनार की गिरि गुफाओं में साधुओं के घर प्रसाद पाकर जीना पड़ता है तो जी रहे हैं। कोई फरियाद नहीं। द्वारिकाधीश होकर सोने के महलों में रहे तो भी कोई फर्क नहीं। अपने देखते-देखते सर्वस्व डूब रहा है तब भी भीतर में वही

समता। श्रीकृष्ण समझते हैं कि यह सब माया है। और हम इसे सत्य समझते हैं। बारिश के दिनों में जैसे बादलों में देवताओं की बारात-सी दिखती है, वह बादलों की माया है। ऐसे संसार में जो बारात दिखती है वह विश्वंभर की माया है। श्रीकृष्ण तुम्हें यह बताना चाहते हैं कि माया को माया समझो और चैतन्य स्वरूप को मैं रूप में जान लो तो माया को भी मज़ा है और अपने आपको भी मज़ा ही मज़ा है।

गोकुल में पहले ग्वाल-गोपियाँ आते हैं और फिर कृष्ण आते हैं। ऐसे तुम्हारे हृदय में छिपे हुए राम या कृष्ण प्रकट हो उसके पहले तुम्हारे इस देहरूपी गोकुल को सँवारने के लिए ग्वाल बाल आ जाए। अर्थात् सत्कर्म और साधना आ जाये तो फिर कन्हैया और राधा अवश्य आयेंगे।

आज के सत्संग का तात्पर्य यह है कि 'अवतार' कोई हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने से नहीं हो जाता। केवल आँसू बहाने से भी नहीं होता। फरियाद करने से भी नहीं होता। गिड़गिड़ाने से भी नहीं होता।

अपने जीवन रूपी गोकुल में पहले ग्वाल-गोपियाँ आते हैं और फिर कृष्ण आते हैं। रामजी आये, वह बंदरों और हनुमान आदि की माँग थी। ऐसे तुम्हारे हृदय में छिपे हुए राम या कृष्ण प्रकट हो उसके पहले तुम्हारे इस देहरूपी गोकुल को सँवारने के लिए ग्वाल बाल आ जाए। अर्थात् सत्कर्म और साधना आ जाये तो फिर कन्हैया और राधा अवश्य आयेंगे। राधा दस महीने पहले आती है, फिर श्रीकृष्ण आते हैं। 'राधा-धारा' यानि पहले भक्ति की वृत्ति आती है, ब्रह्माकार वृत्ति आती है, बाद में ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। इसलिए कहते हैं - "राधा-कृष्ण, सीता-राम।"

आज के इस पावन दिन, आज के माधुर्य भरे अवसर पर जिन्होंने माधुर्य की बौछार की, जो सदा मुस्कुराते रहे, जो सबकुछ करते हुए भी निर्लेप नारायण स्वभाव में सदा जगमगाते रहे और अपने भक्तों को भी वही प्रसाद पिलाते रहे ऐसे श्रीकृष्ण को लाख-लाख वंदन। हज़ार-हज़ार बार दंडवत्। करोड़-करोड़ बार धन्यवाद...।

*

देवी-देवताओं में, मुल्लाओं में, पुरोहितों और पादरियों में तथा संसारियों की बातों में बहुत श्रद्धा की। अब अपने आप में श्रद्धा करो, श्रीकृष्ण की बात में श्रद्धा करो और जीते जी सब दुःखों एवं बन्धनों से मुक्त हो जाओ।

*

श्रद्धा ही श्रेष्ठ धन है। धर्म ही स्थायी सुख देनेवाला है।
सत्य ही परम पदार्थ है।
प्रज्ञा से जीवन बितानेवाला ही संसार में श्रेष्ठ व्यक्ति है।

-- पू. बापू

श्रद्धा

श्रद्धावान, तत्पर और संयमी पुरुष ज्ञान प्राप्त कर लेता है और ज्ञान प्राप्त करके तत्काल ही परमशांति को प्राप्त हो जाता है।

जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं वह पशु और पक्षी जैसा है। जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं उसका विकास भी नहीं है। जिसके अंतःकरण में श्रद्धा नहीं उसके जीवन में रस भी नहीं है। श्रद्धा ऐसा अनुपम सद्गुण है कि जिसके हृदय में वह रहता है उसका चित्त श्रद्धेय के सद्गुणों को पा लेता है।

श्रद्धा सम्बल-सहारा भी है और बल भी है। निर्बल का बल और आश्रय श्रद्धा ही है। अति अहंकारी व्यक्ति श्रद्धा नहीं कर सकता। निर्बल मनवाला मान्यता और कल्पना के संस्कारों को पकड़ रखता है इसलिए उसकी श्रद्धा टिकती नहीं है। वह घटती-बढ़ती रहती है। परमात्मा में, परमात्म-प्राप्त महापुरुषों में और शास्त्रों में श्रद्धा होनी चाहिए। अपने आप पर भी श्रद्धा होनी चाहिए। जितनी श्रद्धा डगमग होती है उतना ही व्यक्ति व्यवहार और परमार्थ दोनों में डगमग रहता है।

जीवन में अडिग श्रद्धा की आवश्यकता है। जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं वह तो कौए से भी बदतर है। कौए का किसी पर भी विश्वास नहीं होता।

दो प्रकार के मनुष्य सद्गुरु पर श्रद्धा नहीं कर पाते। एक तो महामूर्ख। वे न सदगुरु को खोज पाते हैं न उन पर श्रद्धा कर पाते हैं। दूसरे जो घमंडी, अहंकारी हैं वे भी शास्त्र, भगवान और सद्गुरु पर श्रद्धा नहीं कर पाते। वे न स्वर्ग पर श्रद्धा कर पाते हैं, न पुण्य में, न पाप में, न इष्ट में ही श्रद्धा करते हैं।

वसिष्ठजी कहते हैं :

"ऐसे पुरुष मर कर वृक्ष आदि योनियों को पाते हैं।"

अपने पिता पर भी श्रद्धा करनी पड़ती है। माता ने बताया कि - यह पिता है, यह मामा है, यह मासा है। इनको श्रद्धा करके ही मानना पड़ता है। बस के ड्राइवर पर भी श्रद्धा करनी पड़ती है। चाय बनानेवाले होटल के नौकर पर भी श्रद्धा रखनी पड़ती है कि चाय में जूठा, बासी या छिपकली गिरा हुआ दूध नहीं डाला होगा। अरे ! दाढ़ी बनानेवाले हजाम पर भी श्रद्धा करनी पड़ती है कि गाल पर ही उस्तरा चलायेगा, गले पर नहीं घुमायेगा। यह व्यावहारिक श्रद्धा है। परमतत्त्व परमात्मा को पाने के लिए पारमार्थिक श्रद्धा करनी पड़ती है। जो दुर्बल मनवाला और मान्यताओं का गुलाम है वह अपनी मान्यताओं के विपरीत देखेगा तो उसकी श्रद्धा टूट जायेगी। मजबूत मनवाला आदमी कहीं भी, किसी भी अवस्था में रहे, उसकी श्रद्धा टूटती नहीं। अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ श्रद्धा हो। अगर आप जप करना चाहते हैं, ध्यान करना चाहते हैं मगर सोचते हैं कि अभी नहीं परसों करेंगे, दो महीनों के बाद करेंगे ऐसा ख्याल रखेंगे तो आपको ध्यान और जप में श्रद्धा नहीं है। आपको जिसके प्रति श्रद्धा होती है उसका चिंतन सहज में होने लगता है।

जीवन में अगर भगवत्प्राप्त महापुरुष, भगवान या शास्त्र के प्रति श्रद्धा नहीं है तो धन, पुत्र, पत्नी, सब सुविधा होते हुए भी अंतर का संगीत नहीं गूँजता, रस नहीं आता। जिसे अंदर से रस नहीं आता वह सिगरेट, दारू, मांस और अण्डे में श्रद्धा रखते हैं। इससे तो धनभागी हैं वे भक्त जो हरिनाम में, सद्गुरु में एवं शास्त्र में श्रद्धा करते हैं।

शास्त्र, भगवान और सद्गुरु में श्रद्धा रखनेवाले श्रद्धा के बल से तर जाते हैं। जब कि दूसरे जो भगवान, संत पर श्रद्धा नहीं रख पाते वे क्लब में, डिस्को में अंधश्रद्धा करते हैं। उनकी श्रद्धा अनेक चिजों में होती है। वे ठोकरें खाते-खाते जीते हैं। जैसे नदी में तिनका बहता है वैसे ही नास्तिक, अश्रद्धालु का मन अनेक चीज़ों में तर्क-वितर्क, कुतर्क में बहता-बहता संसार के कीचड़ में गिरता है। कभी घोड़ा

श्रद्धा सम्बल-सहारा भी है और बल भी है। निर्बल का बल और आश्रय श्रद्धा ही है। अति अहंकारी व्यक्ति श्रद्धा नहीं कर सकता।

बनता है, कभी गधा बनता है और न चाहते हुए भी समाज की चाकरी में बलात् जुटता रहता है। श्रद्धालु अपने आप कर्म करता है इसलिए वह पावन होता है जबकि श्रद्धारहित व्यक्ति से प्रकृति काम लेती है। जो अपने आप कर्म, सेवा करते हैं उनका अंतःकरण शीघ्र स्वच्छ होकर परमात्मरस से पावन होता है। जो अपने आप ईश्वर, शास्त्र, सत्कर्म और समाज के हित में कर्म नहीं कर पाते उनसे प्रकृति बलात् कर्म लेती है। पशु, वृक्ष और नास्तिकों से बलात् काम लिया जाता है।

परम तत्त्व परमात्मा को पाने के लिए पारमार्थिक श्रद्धा करनी पड़ती है। जो दुर्बल मनवाला और मान्यताओं का गुलाम है वह अपनी मान्यताओं के विपरीत देखेगा तो उसकी श्रद्धा टूट जायेगी। मजबूत मनवाला आदमी कहीं भी, किसी भी अवस्था में रहे, उसकी श्रद्धा टूटती नहीं।

श्रद्धा जिसके अंतःकरण में होती है उसे पावन, रसमय, एकाग्र बनाती है और श्रद्धेय का कृपा-प्रसाद प्रकट करा देती है।

ऋग्वेद के श्रद्धा सूक्त में आता है कि :

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां माध्यन्दिनं परि।

'हम प्रातःकाल में श्रद्धा का आवाहन करते हैं, हम मध्याह्न में श्रद्धा का आवाहन करते हैं और हम संध्याकाल में भी श्रद्धा का आवाहन करते हैं।'

जैसे, हम भगवान की प्रार्थना करते हैं वैसे ही ऋग्वेद के श्रद्धा सूक्त में श्रद्धा की प्रार्थना करते हैं कि :

'हे श्रद्धादेवी ! तुम हममें स्थित हो।'

यजुर्वेद में भी आया है :

'श्रद्धया सत्यमाप्यते ।'

श्रद्धा से सत्य को पाओ।

सामवेद में आता है कि सत्य से असत्य पर, दान से लोभ पर, श्रद्धा से अश्रद्धा पर और अक्रोध से क्रोध पर हम विजय पायें। हमारी श्रद्धा ऐसी हो कि अश्रद्धा को हम कुचल डालें। जिसके जीवन में श्रद्धा एवं दृढ़ता है वह विपरीत परिस्थिति को भी अपनें पैरों तले कुचलकर अपनी मंजिल तक पहुँच जायेगा।

धन्ना जाट में वह श्रद्धा थी कि पत्थर में से भगवान प्रकट हो गये। शबरी में वह श्रद्धा थी कि जिनके दर्शन के लिए मुनि लालायित रहते थे वे भगवान श्रीराम उसके द्वार पर खुद आये। मदालसा में श्रद्धा थी कि मेरी कुख से जो जन्म ले वह अज्ञानी कैसे रहे? और उसने अपने बच्चों को पालने में ही वेदांत का तत्त्वोपदेश देकर ज्ञानी बना दिया।

अष्टावक्र ने जनक से कहा कि-

श्रद्धत्स्व तात श्रद्धत्स्व नात्र मोहं कुरुष्व भोः।
ज्ञानस्वरूपो भगवानात्मा त्वं प्रकृतेः परः॥

'हे सौम्य ! हे प्रिय ! श्रद्धा कर श्रद्धा कर। इसमें (संसार में) मोह मत कर। तू प्रकृति से परे ज्ञानस्वरूप, ईश्वर, परमात्मा है।'

(अष्टावक्रगीता)

तुम श्रद्धा के बल से कुछ बना सकते हो, कुछ बिगाड़ सकते हो। श्रद्धा के बल से किसीके दिल की बात जान सकते हो। अपने साधन पर श्रद्धा रखकर, कहाँ पर क्या हो रहा है यह भी जान सकते हो। एक जगह बैठकर दूर-दूर तक जो चाहो आदेश दे सकते हो। श्रद्धा में ऐसी शक्ति है कि वह दुःख में सुख बना देती है और सुख में सुखानंद स्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार करा देती है।

श्रद्धा जिसके अंतःकरण में होती है उसे पावन, रसमय, एकाग्र बनाती है और श्रद्धेय का कृपा-प्रसाद प्रकट करा देती है।

*

(पेज २४ से जारी...)

सिर में मालिश किया हुआ तेल सभी इन्द्रियों को तृप्त करता है, दृष्टि को बल देता है, सिर के दर्दों को मिटाता है। बाल में तेल पहुँचने से बाल घने, लम्बे तथा मुलायम होते हैं। लंबे समय तक टिकते हैं और बाल काले बने रहते हैं तथा सिर को भी भरा हुआ रखता है।

नित्य कान में तेल डालने से कान में रोग या मैल नहीं होता। गले के बाजू की नाड़ी तथा दाढ़ी अकड नहीं जाती। बहुत ऊँचे से सुनना या बहरापन नहीं होता। कान में रस आदि पदार्थ डालने हों तो भोजन से पहले डालना हितकर है।

पैरों पर तेल मसलने से पाँव मजबूत होते हैं। नींद अच्छी आती है, आँख स्वच्छ रहती है तथा पैर झूठे नहीं पड़ जाते, श्रम से अकड़ नहीं जाते, संकोच प्राप्त नहीं करते तथा फटते भी नहीं। जिस तरह गरुड़ के पास साँप नहीं जाते उसी तरह कसरत के अभ्यासी और तेल की मालिश करानेवाले के पास रोग नहीं जाते। नहाते समय तेल का उपयोग किया हो तो वह तेल रोंगटों के छिद्रों, शिराओं के समूह तथा धमनियों के द्वारा सम्पूर्ण शरीर को तृप्त करता है तथा बल प्रदान करता है।

जिस तरह मूल में सिंचित वृक्षों के पत्ते आदि वृद्धि प्राप्त करते हैं उसी तरह अंगों पर तेल मलवानेवाले मानवों की तेल से सिंचित धातुएँ पुष्टि प्राप्त करती हैं।

बुखार से पीड़ित, कब्जियतवाले, जिसने जुलाब लिया हो, जिसे उल्टी हुई हो, उसे कभी भी तेल की मालिश नहीं करनी चाहिये।

शरीर पर चूर्णरूप पदार्थ मसलने से कफ मिटता है, मज्जा कम होती है, वीर्य बढ़ता है, बल प्राप्त होता है, रक्त ठीक होता है तथा चमड़ी स्वच्छ तथा मुलायम होती है।

मुँह पर तेल मलने से आँखें मजबूत होती हैं, गाल पुष्ट होते हैं, फोड़े तथा फुन्सियाँ नहीं होती और मुँह कमल के समान सुशोभित होता है।

जो मनुष्य प्रतिदिन आँवले से स्नान करता है उसके बाल जल्दी सफेद नहीं होते और वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

(११) दर्पण में देहदर्शन करना यह मंगलरूप है, कांतिकारक है, पुष्टिदाता है, बल तथा आयुष्य को बढ़ाने वाला है और पाप तथा अलक्ष्मी का नाश करनेवाला है।

[भावप्रकाश निघण्टु]

(१२) जो मनुष्य सोते समय बिजोरे के पत्तों का चूर्ण शहद के साथ चाटता है वह सुखपूर्वक सो सकता है।

(१३) जो मानव सूर्योदय से पूर्व आठ आधे चुल्लू भर पानी पीने का नियम रखता है वह रोग और बुढ़ापे से मुक्त रहकर सौ वर्ष के उपरांत भी जीवित रहता है।

काम करते समय पूरी सावधानी, तत्परता बरतो। लापरवाही या और किसी भी कारण से कार्य को बिगड़ने मत दो। कर्म को ही पूजा समझकर उसे सुचारु रूप से करो। ध्यान के द्वारा योग्यता बढ़ाओ।

*

नर-नारी में बसे हुए उस परमात्मा का प्यारा नाम 'नारायण... नारायण...' पूरे प्रेम से लेते चलो और कर्म को कर्मयोग बनाते चलो।

-- पू. बापू

'राही रुक नहीं सकते...'

कर्मावती ने भगवद्गीता की महिमा सुन रखी थी :

एक ब्राह्मण युवक था। उसने अपना स्वभाव-जन्य कर्म तप नहीं किया। केवल विलासी और दुराचारी जीवन जिया। जो आया सो खाया, जैसा चाहा ऐसा भोगा, कुकर्म किया। वह मरकर दूसरे जन्म में बैल बना और किसी भिखारी के हाथ लगा। वह भिखारी बैल पर सवारी करता और बस्ती में धूम-फिरकर भीख माँगकर अपना गुजारा चलाता।

दुःख सहते-सहते बैल बूढ़ा हो गया, उसके शरीर की शक्ति क्षीण हो गई। वह अब बोझ ढोने के काबिल नहीं रहा। भिखारी ने बैल को छोड़ दिया। रोज-रोज व्यर्थ में चारा कहाँ से खिलाए? बैल इधर-उधर भटकने लगा भूखा-प्यासा। कभी कहीं कुछ रूखा-सूखा मिल जाता तो खा लेता। कभी लोगों के डण्डे खाकर ही रह जाना पड़ता।

बारिश के दिन आये। बैल कहीं कीचड़ के गड्ढे में उतर गया, फँस गया। उसकी रगों में ताकत तो थी नहीं। फिर भी छटपटाने लगा, तो और गहराई में उतरने लगा, और पीठ की चमड़ी फट गई, लाल धब्बे दिखाई देने लगे। अब ऊपर से कौए चोंचें मारने लगे, मक्खियाँ भिनभिनाने लगीं। निस्तेज, थका, हारा, मांदा, बूढ़ा बैल अगले जन्म में खूब मजा कर चुका था - अब सजा भोग रहा है। अब तो प्राण निकले तभी छुटकारा हो।

पीठ की चमड़ी फट गई, लाल धब्बे दिखाई देने लगे। अब ऊपर से कौए चोंचें मारने लगे, मक्खियाँ भिनभिनाने लगीं। निस्तेज, थका, हारा, मांदा, बूढ़ा बैल-अगले जन्म में खूब मजा कर चुका था - अब सजा भोग रहा है। अब तो प्राण निकले तभी छुटकारा हो।

वहाँ से गुजरते हुए लोग दया खाते कि बेचारा बैल! कितना दुःखी है! हे भगवान! इसकी सद्गति हो जाय! वे लोग अपने छोटे-मोटे पुण्य प्रदान करते फिर भी बैल की सद्गति नहीं होती थी।

कई लोगों ने बैल को गड्ढे से बाहर निकालने की कोशिश की, पूँछ मरोड़ा, सींगों में रस्सी बाँधकर खींचातानी की, लेकिन कोई लाभ नहीं। वे बेचारे बैल को और परेशान करके थक कर चले गये।

एक दिन बड़े बूढ़े लोग आये। लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। बैल के प्राण नहीं निकल रहे हैं, क्या किया जाय? उस टोले में एक वेश्या भी थी। वेश्या ने कुछ अच्छा संकल्प किया।

वह हररोज सुबह तोते के मुँह से टूटी-फूटी गीता सुनती। समझती तो नहीं फिर भी भगवद्गीता के श्लोक सुनती।

भगवद्गीता आत्मज्ञान देती है, आत्मबल जगाती है। गीता वेदों का अमृत है। उपनिषद रूपी गायों को दूहकर गोपालनन्दन श्रीकृष्ण रूपी ग्वाले ने गीता रूपी दुग्धामृत अर्जुन को पिलाया है। यह पावन गीता हररोज सुबह पिंजरे में बैठा हुआ तोता बोलता था, वह सुनती थी। वेश्या ने इस गीता-श्रवण का पुण्य बैल की सद्गति के लिए अर्पण किया।

जैसे ही वेश्या ने यह संकल्प किया कि बैल के प्राण-पखेरू उड़ गये। उसी पुण्य के प्रभाव से वह बैल सोम शर्मा नामक ब्राह्मण के घर बालक होकर पैदा हुआ।

बालक जब ६ साल का हुआ तो उसके यज्ञोपवीत आदि संस्कार किये गये। माता-पिता ने कुल-धर्म के पवित्र संस्कार दिये। उसकी रुचि ध्यान-भजन में लगी।

वह आसन, प्राणायाम, ध्यानाभ्यास आदि करने लगा। उसने योग में तीव्रता से प्रगति कर ली और १८ साल की उम्र में ध्यान के द्वारा अपना पूर्वजन्म जान लिया। उसको आश्चर्य हुआ कि ऐसा कौन-सा पुण्य उस बाई ने अर्पण किया जिससे बैल की नारकीय अवस्था से मुक्त होकर जप-तप करनेवाले पवित्र ब्राह्मण के घर जन्म मिला?

उसकी रुचि ध्यान-भजन में लगी। वह आसन, प्राणायाम, ध्यानाभ्यास आदि करने लगा। उसने योग में तीव्रता से प्रगति कर ली और १८ साल की उम्र में ध्यान के द्वारा अपना पूर्वजन्म जान लिया।

ब्राह्मण युवक पहुँचा वेश्या के घर। वेश्या अब तक बूढ़ी हो चुकी थी। वह अपने कृत्यों पर पछतावा करने लगी थी। अपने द्वार पर ब्राह्मण कुमार का आया देखकर उसने कहा :

"मैंने कई जवानों की जिन्दगी बरबाद की है, मैं पाप-चेष्टाओं में गरक रहते रहते बूढ़ी हो गई हूँ। तू ब्राह्मण का पुत्र! मेरे द्वार पर आते तुझे शर्म नहीं आती?"

"मैंने कई जवानों की जिन्दगी बरबाद की है, मैं पाप-चेष्टाओं में गरक रहते रहते बूढ़ी हो गई हूँ। तू ब्राह्मण का पुत्र! मेरे द्वार पर आते तुझे शर्म नहीं आती?"

"मैं ब्राह्मण का पुत्र जरूर हूँ पर विकारी और पाप की निगाह से नहीं आया हूँ। माताजी! मैं तुमको प्रणाम करके पूछने आया हूँ कि तुमने कौन-सा पुण्य किया है?"

"भाई! मैं तो वेश्या ठहरी। मैंने कोई पुण्य नहीं किया।"

"उन्नीस साल पहले किसी बैल को कुछ पुण्य अर्पण किया था?"

"हाँ... स्मरण में आ रहा है। कोई बूढ़ा बैल परेशान

हो रहा था, प्राण नही छूट रहे थे बेचारे के। मुझे बहुत दया आई। मेरे और तो कोई पुण्य थे नहीं। किसी ब्राह्मण के घर में चोर चोरी करके आये थे। उसमें तोते का पिंजरा भी था, जो मेरे वहाँ, छोड़ गये। उस ब्राह्मण ने तोते को श्रीमद् भगवद्गीता के श्लोक रटाये थे। वह मैं सुनती थी। उसका पुण्य मैंने बैल को अर्पण किया।"

ब्राह्मण-कुमार को ऐसा लगा कि यदि भगवद्गीता का केवल श्रवण ही इतना लाभ कर सकता है तो उसका मनन और निदिध्यासन करके गीता-ज्ञान पचाया जाय, तो कितना लाभ हो सकता है ! वह पूर्ण शक्ति से चल पड़ा गीता-ज्ञान की तरफ।

कर्मावती को जब गीता-माहात्म्य की यह कथा सुनने को मिली तो उसने भी गीता का अध्ययन शुरु कर दिया। भगवद्गीता में तो प्राणबल है, हिम्मत है, शक्ति है। कर्मावती के हृदय में भगवान श्रीकृष्ण के लिए प्यार पैदा हो गया। उसने पक्की गाँठ बाँध ली कि कुछ भी हो जाय, मैं उस बाँके बिहारी के आत्म-ध्यान को अपना जीवन बना लूँगी, गुरुदेव के ज्ञान को पूरा पचा लूँगी। मैं संसार की भट्ठी में पच-पचकर मरूँगी नहीं। मैं तो परमात्म-रस के घूँट पीते पीते अमर हो जाऊँगी।

कर्मावती ने ऐसा नहीं किया कि गाँठ बाँध ली और फिर रख दी किनारे। नहीं... एक बार दृढ़ निश्चय कर लिया और हररोज सुबह उस निश्चय को दुहराती, अपने लक्ष्य का बार-बार स्मरण करती और अपने आपको कहा करती कि मुझे ऐसा बनना है। दिन-प्रतिदिन उसका निश्चय और मजबूत होता गया।

कोई एक बार निर्णय कर ले और फिर अपने निर्णय को भूल जाय तो उस निर्णय की कोई कीमत नहीं रहती। निर्णय करके हररोज उसे याद करना चाहिए, उसे दुहराना चाहिए कि हमें ऐसा बनना है। कुछ भी हो जाय, निश्चय से हटना नहीं है।

कोई एक बार निर्णय कर ले और फिर अपने निर्णय को भूल जाय तो उस निर्णय की कोई कीमत नहीं रहती। निर्णय करके हररोज उसे याद करना चाहिए, उसे दुहराना चाहिए कि हमें ऐसा बनना है। कुछ भी हो जाय, निश्चय से हटना नहीं है।

हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं।
हम से जमाना है जमाने से हम नहीं॥

पाँच वर्ष के ध्रुव ने निर्णय कर लिया तो विश्वनियंता विश्वेश्वर को लाकर खड़ा कर दिया। प्रह्लाद ने निर्णय कर लिया तो स्तंभ में से भगवान नृसिंह को प्रकट होना पड़ा। मीरा ने निर्णय कर लिया तो मीरा भक्ति में सफल हो गई। प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी बापू ने निर्णय कर लिया तो ब्रह्मज्ञान में पारंगत हो गये। हम अगर निर्णय करें तो हम क्यों सफल नहीं होंगे?

जो साधक अपने साधन-भजन करने के पवित्र स्थान में, ब्राह्ममुहूर्त के पावन काल में महान बनने के निर्णय को बार-बार दुहराते हैं उनको महान होने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

कर्मावती १८ साल की हुई। भीतर से जो पावन संकल्प किया था उस पर वह भीतर अडिग होती चली गई। वह अपना, निर्णय किसीको बताती नहीं थी, प्रचार नहीं करती थी, हवाई गुब्बारे नहीं उड़ाया करती थी अपितु सत्संकल्प की नींव में साधना के द्वारा जल-सिंचन किया करती थी।

जो साधक अपने साधन-भजन करने के पवित्र स्थान में, ब्राह्ममुहूर्त के पावन काल में महान बनने के निर्णय को बार-बार दुहराते हैं उनको महान होने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

कई भोली-भाली मूर्ख बच्चियाँ ऐसी होती हैं, जिन्होंने दो-चार सप्ताह ध्यान-भजन किया, दो-चार महीने साधना की और चिल्लाने लग गईं कि मैं अब शादी नहीं करूँगी, मैं अब साध्वी बन जाऊँगी, संन्यासिनी बन जाऊँगी, साधना करूँगी। साधन-भजन की शक्ति बढ़ने के पहले चिल्लाने लग गईं।

वे ही बच्चियाँ दो-चार साल के बाद आयीं। देखा

तो उन्होंने शादी कर ली थी और अपना नन्हा-मुन्ना बेटा-बेटी ले आकर मुझसे आशीर्वाद माँग रही थीं कि मेरे बच्चे को आशिष दें कि इसका कल्याण हो। मैंने कहा : अरे! तू तो बोलती थी, शादी नहीं करूँगी, संन्यास लूँगी, साधना करूँगी और फिर यह संसार का झमेला?

साधना की केवल बातें मत करो, काम करो, बाहर घोषणा मत करो, भीतर ही भीतर परिपक्व बनते जाओ।

साधना की केवल बातें मत करो, काम करो, बाहर घोषणा मत करो, भीतर ही भीतर परिपक्व बनते जाओ। जैसे, स्वाति नक्षत्र में आकाश से गिरती जलबूँद ग्रहण कर मछली सागर के अन्तराल में चली जाती है, जल की बूँद को पका-पकाकर मोती बना लेती है।

ऐसे ही तुम भी अपनी भक्ति की कुँजी गुप्त रखो। बाहर घोषणा मत करो। भीतर ही भीतर भक्ति की शक्ति को बढ़ने दो। साधना की बात किसीको बताओ नहीं। जो अपने परम हितैषी हों, भगवान के सच्चे भक्त हों, श्रेष्ठ पुरुष हों, सद्गुरु हों केवल उनसे ही अपनी अंतरंग साधना की बात करो। अंतरंग साधना के विषय में पूछो। अपने आध्यात्मिक अनुभव जाहिर करनेसे साधना का ह्रास होता है और गोप्य रखने से साधना में दिव्यता आती है।

मैं जब घर में रहता था, तब युक्ति से साधन-भजन करता था और भाई को बोलता था : थोड़े दिन भजन करने दो, फिर दुकान पर बैठूँगा। अभी अनुष्ठान चल रहा है। एक पूरा होता तो कहता, अभी एक बाकी है। फिर थोड़े दिन दुकान पर जाता। फिर उसको बोलता : मुझे कथा में जाना है। तो भाई चिढ़ता : "रोज रोज ऐसा कहता है? सुधरता नहीं?" मैं कहता : "सुधर जाऊँगा।"

ऐसा करते-करते जब अपनी वृत्ति पक्की हो गई, तब मैंने कह दिया : मैं दुकान पर नहीं बैठूँगा, जो करना हो सो कर लो। यदि पहले से ही ऐसी बगावत के शब्द बोलता तो वह कान पकड़कर दुकान पर बैठा देता।

मेरी साधना को रोककर मुझे अपने जैसा संसारी बनाने के लिए रिश्तेदारों ने कई उपाय आजमाये थे। मुझे फुसलाकर सिनेमा देखने ले जाते, जिससे संसार का रंग लग जाय, ध्यान-भजन की रुचि नष्ट हो जाय। फिर जल्दी जल्दी शादी करा दी। हम दोनों को कमरे में बन्द कर देते ताकि मैं भगवान से प्यार न करूँ और संसारी हो जाऊँ। अहाहा...! संसारी लोग साधना से कैसे कैसे गिराते हैं। मैं भगवान से आर्त भाव से प्रार्थना किया करता कि हे प्रभु! मुझे बचाओ। आँखों से झर झर आँसू टपकते। उस दयालु देव की कृपा का वर्णन नहीं कर सकता।

मैं भगवान से आर्त भाव से प्रार्थना किया करता कि हे प्रभु! मुझे बचाओ। आँखों से झर झर आँसू टपकते। उस दयालु देव की कृपा का वर्णन नहीं कर सकता।

मैं पहले भजन नहीं करता तो घरवाले बोलते : भजन करो... भजन करो...। जब मैं भजन करने लगा, तो लोग बोलने लगे : रुको... रुको...। इतना सारा भजन नहीं करो। जो माँ पहले बोलती थी कि ध्यान करो। फिर वही बोलने लगी कि इतना ध्यान नहीं करो। तेरा भाई नाराज होता है। मैं तेरी माँ हूँ। मेरी आज्ञा मानो।

अभी जहाँ बड़ा विशाल भव्य आश्रम है, वहाँ पहले कुछ नहीं था। भयावह कोतर, कँटीले झाड़-झंखाड़। उस समय जब हम मोक्ष कुटीर बना रहे थे तब भाई माँ को बहकाकर ले आया। बोला : "सात-सात साल चला गया था। अब गुरुजी ने भेजा है तो घर में रहो, दुकान पर बैठो। यहाँ जंगल में कुटिया बनवा रहे हो! इतनी दूर तुम्हारे लिए रोज-रोज टिफिन कौन लाएगा?"

माँ भी कहने लगी : "मैं तुम्हारी माँ हूँ न? तुम मातृआज्ञा शिरोधार्य करो। यह ईंटें वापस कर दो। घर में आकर रहो। भाई के साथ दुकान पर बैठा करो।"

यह माँ की आज्ञा नहीं थी, ममता की आज्ञा थी और भाई की चाबी भराई

हुई आज्ञा थी। माँ ऐसी आज्ञा नहीं देती।

भाई मुझे घर ले जाने के लिए जोर मार रहा था। भाभी भी कहने लगी : "यहाँ उजाड़ कोतरों में अकेले पड़े रहोगे? क्या हररोज मणिनगर से आपके भाई टिफिन लेकर यहाँ आएँगे?"

मैंने कहा : "ना... ना...। आपका टिफिन हमको नहीं चाहिए। उसे अपने पास ही रखो। यहाँ आकर तो हजारों लोग भोजन करेंगे। हमारा टिफिन वहाँ से थोड़े ही मंगवाना है?"

उन लोगों को यही चिन्ता होती थी कि यह अकेला यहाँ रहेगा तो मणिनगर से उसके लिए खाना कौन लाएगा? उनको पता नहीं कि जिसके सात साल गये हैं साधना में, वह अकेला नहीं है, विश्वेश्वर उसके साथ है। बेचारे संसारियों की बुद्धि अपने ढंग की होती है।

माँ मुझे दोपहर को समझाने आयी थी। उसके दिल में ममता थी। यहाँ पर कोई पेड़ नहीं था, बैठने की जगह नहीं थी। वीरान वांघे-कोतर थे। जहाँ मोक्ष कुटीर बनी है, वहाँ खिजड़े का पेड़ था। वहाँ छारे लोग दारू छिपाते थे। कैसी-कैसी विकट परिस्थितियाँ थीं, लेकिन हमने निर्णय कर लिया था कि कुछ भी हो, हम तो अपनी रामनाम की शराब पियेंगे, पिलाएँगे।

कर्मावती ने भी निर्णय कर लिया था, लेकिन उसे भीतर छिपाए थी। जगत भक्ति करे नहीं और करने दे नहीं। दुनिया दोरंगी है।

दुनिया कहे मैं दोरंगी पल में पलटी जाऊँ।
सुख में जो सोते रहें वाको दुःखी बनाऊँ॥

आत्मज्ञान या आत्म-साक्षात्कार तो बहुत ऊँची चीज होती है। तत्वज्ञानी के आगे भगवान कभी अप्रकट रहता ही नहीं। आत्म-साक्षात्कारी तो स्वयं भगवद् स्वरूप हो जाते हैं। वे भगवान को बुलाते नहीं। वे जानते हैं कि रोम-रोम में, अनंत-अनंत ब्रह्माण्डों में ठोस भरा है वह अपने हृदय में भी है। ज्ञानी अपने हृदय में ही ईश्वर को जगा लेते हैं, स्वयं ईश्वर स्वरूप बन जाते हैं। वे पक्के गुरु के चेले होते हैं, ऐसे-वैसे नहीं होते।

*

आज शुभ संकल्प करो कि जीवन में से तुच्छ इच्छाओं को, विकारी आकर्षणों को और दुःखद चिन्तन को अलविदा देंगें। सुखद चिन्तन, निर्विकारी नारायण का ध्यान और आत्मवेत्ताओं के उन्नत विचारों को अपने हृदय में स्थान देकर सर्वांगीण उन्नति करेंगे।

*

अज्ञान की कालिमा को ज्ञानरश्मि से नष्ट कर आनन्द के महासागर में कूद पड़ो। वह सागर कहीं बाहर नहीं है, तुम्हारे दिल में ही है। दुर्बल विचारों और तुच्छ इच्छाओं को कुचल डालो। दुःखद विचारों और मान्यताओं का दिवाला निकालकर आत्मा-मस्ती का दीप जगाओ। खोज लो उन आत्मरामी संतों को जो तुम्हारे सच्चे सहायक हैं... और यह तुम्हारे हाथ की बात है।

*

कर्म की सफलता और पूर्णता के लिए कर्म करते समय उत्साह, दृढ़ता और निर्भयता रखो। जिससे व्यवहार करते हो उसके लिए प्रीति और हित की भावना रखो। इससे तुम्हारा कर्म महापूजा बन जाएगा।

-- पू. बापू

अपने हाथ में ही अपना आरोग्य

(१) नाक को रोगरहित रखने के लिए हमेशा नाक में सरसों आदि तेल की बूंदें डालने का अभ्यास रखना। कफ की वृद्धि हो या सुबह में पित्त की वृद्धि हो, या दोपहर को वायु की वृद्धि हो तब शाम को बूंदें डालनी। नाक में तेल की बूंदें डालनेवाले आदतियों का मुख सुगन्धित रहता है, शरीर पर झुर्रियाँ नहीं पड़तीं। आवाज स्निग्ध निकलती है। इन्द्रियाँ निर्मल रहती हैं। सफेद बाल जल्दी नहीं आते तथा फुन्सियाँ नहीं होतीं।

(२) दिन में सोना नहीं चाहिये कारण कि दिन में सोने से कफ होता है। ग्रीष्म ऋतु के अलावा बाकी के सभी दिनों में दिन में सोना वर्जित है।

(३) दस वर्ष के बाद बचपन समाप्त होता है, बीस वर्ष के बाद वृद्धि रुक जाती है, तीस वर्ष के बाद कान्ति कम होती है। चालीस वर्ष के बाद स्मरण शक्ति कम होती है। पचास वर्ष के बाद चमड़ी की स्निग्धता कम होती है, साठ वर्ष के बाद नेत्र की शक्ति कम होती है, सत्तर वर्ष के बाद वीर्य कम होता है, अस्सी वर्ष के बाद पराक्रम में कमी होती है। नव्वे वर्ष के बाद बुद्धि कम होती है, सौ वर्ष होने पर कर्मेन्द्रियों की शक्ति कम होती है। एक सौ दस वर्ष के बाद चेतना कम होती है और एक सौ बीस वर्ष के बाद जीवन कम होता है।

(४) अंगों को दबवाना यह माँस, खून और चमड़ी को खूब साफ करता है, प्रीतिकारक होने से निद्रा लाता है, वीर्य बढ़ाता है तथा कफ, वायु एवं परिश्रम का नाश करता है।

(५) भोजन के बाद बैठे रहनेवाले के शरीर में आलस भर जाती है। सो जाने से शरीर पुष्ट होता है। सौ कदम चलनेवाले की उम्र बढ़ती है तथा दौड़नेवाले की मृत्यु उसके पीछे ही दौड़ती है।

(६) जीवों की नाभि के ऊपर बाईं ओर अग्नि रहता है अतः खाया हुआ पचाने के लिए बाईं करवट सोना चाहिये

(७) स्वादिष्ट अन्न मन को प्रसन्न करता है, बल बढ़ाता है, पुष्ट करता है, उत्साह बढ़ाता है तथा आयुष्य की वृद्धि करता है जबकि स्वादहीन अन्न ऊपर के कथन से विपरीत असर करता है।

(८) भोजन के प्रारंभ में नमक तथा अदरक का भक्षण करना यह सर्वकाल में लाभकारी है, अग्नि को प्रज्ज्वलित करनेवाला है, रुचि उत्पन्न करनेवाला है तथा जीभ और कंठ को साफ करनेवाला है।

(९) भोजन करते समय माता, पिता, मित्र, वैद्य, रसोइया, हंस, मोर, सारस या चकोर पक्षी की निगाह उत्तम गिनी जाती है; किन्तु गरीब, हल्के, भूखे, पापी, पाखंडी या रोगी मनुष्य एवं मुर्गे तथा कुत्ते की दृष्टि अच्छी नहीं गिनी जाती।

(१०) सभी अंगों में पुष्टिदायक तेल की मालिश अवश्य करानी चाहिए। सिर में, कान में और पैरों में तो विशेष रूप से करानी चाहिए। मालिश कराने से वायु तथा कफ मिटता है, थकान मिटती है, शक्ति तथा सुख की प्राप्ति होती है, नींद अच्छी आती है, शरीर का वर्ण सुधरता है, शरीर में कोमलता आती है, आयुष्य की वृद्धि होती है तथा देह की पुष्टि होती है।

(अनु. पेज १६ पर...)

पाँच दिन में आठ बार मरे हुए जीवित मानव की मुलाकात... ! ! ! ? ? ?

असारवा मिल के डिप्टी इंजिनियर श्री जयंतिभाई को अभी अभी खतरनाक दिल का दौरा आ गया। सारा परिवार थोड़े दिन तक भयंकर आँधी में फँस गया। अगम्य शक्ति की लीला से इस तूफान के शान्त होने के बाद उनसे मुलाकात की। जीवन के अत्यन्त नाजुक और विषम काल में उन्होंने प्रकृति से ऊपर जिस अगम्य शक्ति का अनुभव किया, उसकी गहन गाथा सुनकर लगा कि आज के विज्ञानप्रेमी युग में मानव की श्रद्धा परमात्मा से कैसी करुणालीला करा सकती है, उसका जीता जागता प्रमाण (दस्तावेज) नास्तिक जगत के सामने रखने योग्य है। अर्वाचीन युग में वैज्ञानिक संशोधनों के साथ कदम मिलाकर चलनेवाले हृदय विशेषज्ञ डॉक्टरों का स्पष्ट समर्थनवाला यह दस्तावेज (प्रमाण) है।

तो आयें, हम उस मुलाकात से प्राप्त संघर्षमय काल की करुणता तथा श्रद्धा के सुमनों का माधुर्य अनुभव करें।

श्री जयंतिभाई ने बताया : "तारीख १२ जुलाई की शाम को छः बजे अपनी गाड़ी में बैठकर मिल से घर जाने के लिये निकला, तब छाती में दर्द आरंभ हुआ। गेस के कारण ऐसा हुआ होगा ऐसा समझ कर रास्ते में गाड़ी रोकी और

पसीने से तरबतर हो गया। सिर के बाल, कपड़े सहित शरीर से पसीना बहने लगा। क्षण के लिये विचार हुआ कि आज घर पहुँच सकूँगा या नहीं!

गोली खाई। इस पर भी पीड़ा बढ़ने लगी। पसीने से तरबतर हो गया। सिर के बाल, कपड़े सहित शरीर से पसीना बहने लगा। रास्ते में फिर दो बार गाड़ी रोकी। गेस की दो दो गोलियाँ निगल गया किन्तु पीड़ा कम नहीं हुई। क्षण के लिये विचार हुआ कि आज घर पहुँच सकूँगा या नहीं!

जैसे तैसे करके घर पहुँचा। कपड़े निकाल दिये। हृदय पर भयंकर दबाव पड़ने लगा। गेस की दूसरी गोलियों के साथ सोड़ा जींजर की दो बोतल पीकर कमरे में इधर उधर दौड़ा दौड़ी करने लगा... इस विचार से कि जैसे तैसे करके शरीर में से गेस निकल जाय तो शान्ति हो। मुझे स्वप्न में भी ख्याल न था कि जीवनज्योति को बुझानेवाला यह हृदयरोग का हमला है।

शाम को ७-३० बजे मेरी भतीजी डॉक्टर कुमकुम घर आई। मेरे स्वास्थ्य की जाँच करते समय चौंक उठी। तात्कालिक अपने निकट के परिचित हृदय विशेषज्ञ डॉक्टर अतुल आर. परीख को फोन करके बुलाये। डॉक्टर ने आकर इ.सी.जी. (इलेक्ट्रिक कार्डियोग्राम ग्राफ) ली तो परिणाम खराब। डॉक्टर गंभीर बन गये। घर के लोगों को बाहर बुलाये। फिर क्या हुआ बेटी कुमकुम ?"

कुमकुम बहन ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा- "डॉक्टर ने हमें बाहर आकर बताया कि अपने सगे-संबंधियों को जिनको बुलाने हों, बुला लो। केस समाप्त है। हृदय के नीचे का आधा भाग बंद पड़ गया है। अस्पताल में भले

ले जाओ किन्तु दर्दी अस्पताल तक पहुँच सके तो तुम्हारा भाग्य। बाकी..

इस पर भी डॉक्टर ने इन्जेक्शन दिये। हम रात को ११-३० बजे एम्ब्युलन्स बुलाकर तथा डॉक्टर की लिखित रिपोर्ट लेकर शारदाबहन होस्पीटल जाने के लिए निकले। चाचा की यह दशा देखकर घर के सभी व्याकुल हो गये। 'गुरुदेव... गुरुदेव ' की पुकार के साथ आकुल-व्याकुल होते हुए पूज्य बापू का स्मरण करने लगे।"

उन्होंने जाँच की तो नाड़ी बंद...! और अंकल का हृदय भी बंद...!

जयंतिभाई : "डॉक्टर के मतानुसार एम्ब्युलन्स में जाते हुए एक छोटा-सा धक्का भी जीवनदीप बुझाने के लिये काफी था किन्तु गुरुदेव की कृपा निरंतर मेरे साथ थी। गाड़ी के प्रत्येक धक्के से मेरा दर्द घटने लगा। अस्पताल में पहुँचे तब मैं पूर्ण भान में था।"

कुमकुम : "डॉक्टर ने परीख साहब का सम्पूर्ण रिपोर्ट ध्यानपूर्वक पढ़ा और फिर अंकल की ओर देखा। उनकी स्वस्थता देखकर आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने पूछा- 'इन्हें कोई उपचार दिया है?' मैंने कहा- 'साहब! सभी ट्रीटमेंट देना बाकी है। आप जल्दी से जल्दी आरंभ करें।'

तात्कालिक उपचार किया गया। सभी के जाने के बाद बेहोश चाचा के पास मैं बैठकर गुरुदेव का स्मरण कर रही थी तब विलक्षण दृश्य मैंने देखा। चाचा के स्थान पर मुझे पलंग पर सोये हुए गुरुदेव दिखाई दिये। नाक में ऑक्सीजन की नली है। उनके सिर पर कोई दिव्य शक्ति हाथ फिरा रही है। मैं जग पड़ी। लंबे समय तक यही दृश्य दिखता रहा। मैंने आँखें मसलकर दो मिनट बाद देखा तो फिर चाचा ही दिखाई दिये।

उसके बाद गुरुदेव की दिव्य वाणी सुनाई दी : 'पीछे देख... भयंकर दो आदमी आ रहे हैं...'

मैंने दरवाजे की ओर देखा तो यमराज के स्टाफ के हों ऐसे दो भयंकर क्रूर दिखाई देनेवाले दो मानव हमारी ओर आ रहे थे। फिर गुरुदेव ने गर्जना की : 'उनको वहीं रोक दो...'

दोनों व्यक्ति डॉक्टर की मेज के पास खड़े रह गये तथा वहीं से अंकल को क्रूर दृष्टि से ताकते रहे। थोड़ी देर में तो ऐसे लोगों का समूह इकट्ठा हो गया। परन्तु कोई भी हमारी ओर आगे न बढ़ सका। अंकल तो बेहोश थे। नाक में ऑक्सीजन की नली थी। हृदय के साथ मोनीटर जोड़ दिया गया था जिससे हृदय की तत्कालीन परिस्थिति की रिपोर्ट टी. वी. की स्क्रीन पर निरन्तर दिखाई देती थी।

तारीख १३ की शाम को स्वास्थ्य अधिक बिगड़ा। भयंकर हृदयरोग हुआ।

डेढ़ घंटे के बाद फिर से ऐसा ही हमला हुआ। इस समय डॉक्टर साथ में ही थे। उन्होंने जाँच की तो नाड़ी बंद... ! और अंकल का हृदय भी बंद... ! मोनीटर टी. वी. की स्क्रीन पर हृदय के खराब समाचार के संकेत मिल रहे थे। डॉक्टर जोर से हृदय को मसलकर पंपींग करने लगे। पाँच सात बार के प्रयत्न के बाद हृदय की धड़कन फिर से आरंभ हो गई। चल बसे हुए काका अगम्य शक्ति की लीला से वापस आये। बुझे हुए जीवन दीप की ज्योति पुनः चेतनामय बनी।

पाँच सात बार के प्रयत्न के बाद हृदय की धड़कन फिर से आरंभ हो गई। चल बसे हुए काका अगम्य शक्ति की लीला से वापस आये। बुझे हुए जीवन दीप की ज्योति पुनः चेतनामय बनी।

अंकल का हृदय अत्यन्त खराब हालत में काम कर रहा था। डॉक्टरों ने हम सबके हस्ताक्षर कराके हृदय को Pace Maker (हृदय को कृत्रिम रूप से चलाने वाला यंत्र) के साथ जोड़ दिया।

इस पर भी हृदय बिलकुल मंदगति से चलता था। कम से कम खून परिभ्रमण कर रहा था। नाड़ी

की धड़कन ८० ऊपर से घट कर ३० हो गई थी।

परन्तु... हृदय तो बैठ रहा है... पल्स गई ... हम अपने सभी प्रयास कर चुके। इस दर्द के लिए उपलब्ध आज तक कोई भी प्रयास हमने बाकी नहीं रखा। अब... अब तो एक मात्र ईश्वर का आधार...।

थोड़े समय तक सब बराबर चलता रहा। किन्तु १५ तारीख को दोपहर तीन बजे फिर से अंकल को जोरदार हमला हुआ।

अंकल इस तरह एक के बाद एक हिचकी की घात में से बच रहे थे। किन्तु पुनः रात को बारह बजे दर्द शुरु हुआ। ऐसा कातिल दर्द कि अंकल हाथ, पाँव तथा सिर पछाड़ते... पसीने से तरबतर.. बारबार 'हे राम... हे गुरुदेव...' ऐसा चिल्लाते। बाहर का कुछ ज्ञान नहीं। तात्कालिक बुलाने से डॉक्टर आये और रात को दो बजे तक ट्रीटमेन्ट दी। अन्त में डॉक्टर भी निराश हो गये। उन्होंने कहा :

"इन्हें जो कुंछ भी दवा दी जानी चाहिए वह सब हम दे चुके हैं... सभी गोलियाँ दे चुके हैं... छः छः इन्जेक्शनों का मिश्रण एक इन्जेक्शन में दे चुके हैं... परन्तु... हृदय तो बैठ रहा है... पल्स (नाड़ी की धड़कन) गई... हम अपने सभी प्रयास कर चुके। इस दर्द के लिए उपलब्ध आज तक कोई भी प्रयास हमने बाकी नहीं रखा। अब... अब तो एक मात्र ईश्वर का आधार...।"

मिनट पर मिनट बीत रहे थे। सभी शांत थे। प्रकृति की करामात के आगे मानव के हाथ अकिंचन मालूम होते थे। हम मन में ही गुरुदेव को प्रार्थना कर रहे थे। पाँच मिनट के बाद डॉक्टर ने पूछा :

"जयंतिभाई ! तुम्हें क्या होता है?"

बंद आँखों से ही जवाब मिला : "मुझे कुछ भी नहीं होता। अब मुझे बिलकुल आराम है।" और सचमुच दस पन्द्रह मिनट में अंकल बिलकुल नोर्मल बन गये। डॉक्टर यह देखकर आश्चर्यचकित हो गये। ऐसा अनोखा केस उन्हें पहली ही बार देखने मिला होगा। गुरुदेव की पूर्ण कृपा के सिवाय इसमें दूसरा क्या हो सकता है?

घर के सभी सदस्य पागल होकर जीते थे। खाने पीने तथा सोने का भान न था। छोटे बड़े सभी पूज्य गुरुदेव का स्मरण कर रहे थे।

सुबह ४-४५ बजे फिर से अंकल को हिचकी आई। डॉक्टर का उपचार मिलने से शान्ति हुई। परन्तु ६-४५ बजे ऐसा भयंकर हमला हुआ कि बस... सीमा आ गई। अब तक के हुए हमलों में से यह सब से अधिक और खतरनाक हमला था। सात मिनट तक हृदय बिलकुल बंद रहा। डॉक्टरों ने अंकल की छाती में मुक्के मारे, हथेली से हृदय को मसलकर पंपींग किया किन्तु हृदय सचेतन नहीं हुआ। हमेशा के लिए नाराज होकर बैठ जाने की तैयारी कर ली। मानो यमदूत अपमृत्यु के लिए बार-बार प्रयत्न करते हों तथा कुटुंब के लोगों की प्रार्थना तथा गुरुदेव की कृपा उनके साथ संघर्ष में उतरी हो, ऐसा लगता था।

डॉक्टर थके। मुझसे कहा- 'बहन ! अब तुम प्रयास करके देखो... शायद चालू हो जाय।'

डॉक्टर के किये हुए प्रयत्नों को मैं देख रही थी। उनसे अधिक प्रयत्न मैं क्या करनेवाली थी! मैंने एक मिनट आँखें बंद कीं। हृदय को खूब खूब अहोभाव से भरकर पूज्य गुरुदेव का स्मरण किया... प्रार्थना की... गुरुमंत्र का मन ही मन रटन किया... हे अनाथों के नाथ ! इस डूबती नैया को अब आप ही को कुशलक्षेम किनारे पर पहुँचानी है....'

अब तक के हुए हमलों में से यह सब से अधिक और खतरनाक हमला था। सात मिनट तक हृदय बिलकुल बंद रहा।

फिर मैंने बिलकुल हल्के हाथ से अंकल का हृदय थोड़ा मसला... पंपींग किया... दूसरे ही प्रयत्न के

हृदय सचेतन नहीं हुआ। हमेशा के लिए नाराज होकर बैठ जाने की तैयारी कर ली। मानो यमदूत अपमृत्यु के लिए बार-बार प्रयत्न करते हों तथा कुटुंब के लोगों की प्रार्थना तथा गुरुदेव की कृपा उनके साथ संघर्ष में उतरी हो, ऐसा लगता था।

बाद डॉक्टर खुशी के मारे उछल पड़े। कूदका लगाकर आनंद से कहने लगे : 'चालू हुआ... चालू हुआ... बराबर है... तुम पंपींग चालू रखो... चालू रखो...'

...और ऐसा करते करते अंतिम सात मिनट से बंद पड़ा हुआ अंकल का हृदय फिर से धड़कने लगा और थोड़ी ही देर में नोर्मल गति में आ गया।

अब डॉक्टरों को लगने लगा कि इस हृदय को चालू रखने के लिए सामान्य 'पेस मेकर' नहीं चलता। हृदय को 'ओटोमेटिक डिमांड पेस मेकर' पर चलाना होगा। इस ऑपरेशन के लिए बम्बई अथवा मद्रास जाना पड़े। लगभग साठ हजार का खर्च भी वहन करना पड़े।

अंतिमबार अंकल को हिचकी आई तब हृदय को चालू करने के लिए अंतिम से अंतिम उपाय के तौर पर डॉक्टरों ने सिर में करंट देने की तैयारी की किन्तु गुरुदेव की कृपा से बिना करंट के ही हृदय चालू हुआ और उसके बाद कोई हमला नहीं हुआ। ७६ घंटों में तो हृदय एक दम 'ऑलराइट...।' सामान्य तौर पर अंतिम हमले के बाद 'पेसमेकर' १२८ घंटे कार्य करे तभी अच्छा परिणाम देखने को मिल सकता है परन्तु इसमें तो ७६ घंटों में ही धारणा के अनुसार परिणाम मिल गया। सभी साधन हटा दिये गये। इस अनोखे केस को देखने के लिए दूसरे डॉक्टर भी उमड़ पड़े थे। हमें तो इसमें पूज्य गुरुदेव की असीम करुणाकृपा के आश्चर्य के सिवाय दूसरा कुछ भी दिखाई नहीं देता।"

जयंतिभाई : "यह सब तो अत्यन्त संक्षेप में बताया है। वास्तव में प्रत्येक क्षण पूज्य गुरुदेव का आश्वासन कैसे कार्य कर रहा था, यह सब तो अवर्णनीय है। तारीख २७ को मैं बिस्तर से उठ सका और तारीख २९ को घर आया। डॉक्टर ने मुझे सख्त मनाही की थी कि उनकी इजाजत के बिना मुझे किसी भी संयोग में कमरे से बाहर नहीं निकलना चाहिये।

तारीख ५ वीं अगस्त को डॉक्टर अतुल भाई परीख हमारे घर पर आये। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने मुझसे पूछा :

"जयंतिभाई ! अस्पताल में तुम्हें कन्वर्जन आते, हिचकी आती तब तुम्हें क्या होता था ? तुम्हें कैसा अनुभव होता था ?"

मैंने कहा : "उस समय पीड़ित अवस्था में मैं अत्यन्त गहराई में उतरता जा रहा हूँ, ऐसा अनुभव करता था। किन्तु मेरे प्राण बाहर निकल नहीं सकते थे। उन्हें कोई रोक रहा था। फिर मुझे कोई चेतना नहीं रहती थी। जब धीरे धीरे पुनः चेतना में आता तो अनुभव होता कि मेरी छाती पर, हृदय पर कोई मुक्के मार रहा है, हृदय को हाथ से मसल रहा है। जब सम्पूर्ण होश में आता तब आप सबको मेरे उपचार में जुटे हुए देखता।"

डॉक्टर बोले : "My dear friend ! You were technically dead for eight times. तुम पाँच दिन में आठ बार मर चुके थे... हम Death Certificate दे दें ऐसे। किन्तु तुम्हारे पीछे कोई अगम्य दिव्य शक्ति काम कर

डॉक्टर बोले : "My dear friend! You were technically dead for eight times. तुम पाँच दिन में आठ बार मर चुके थे...हम Death Certificate दे दें ऐसे। किन्तु तुम्हारे पीछे कोई अगम्य दिव्य शक्ति काम कर रही है ।

रही है । (पूज्य गुरुदेव की तस्वीर के सामने लम्बे हाथ करते हुए बोले :)... और वह शक्ति यही है । उनकी कृपा के सिवाय हम आपके साथ आज इस ढंग से बातचीत करने में असमर्थ रहते । वैसे तो हम ऐसे खतरनाक हृदय रोग के रोगी को तीन महीने तक बिस्तर से उठने की भी इजाजत नहीं देते किन्तु इस दैवी शक्ति का चमत्कार हमें कह रहा है, अत: कहने का साहस कर रहा हूँ कि तुम केवल दस मिनट के लिए आश्रम में गुरुदेव के दर्शन के लिए भले ही जाओ।"

डॉक्टर ने दूसरी अनेक सावधानी रखने की सूचनाएँ दीं। जब आश्रम में पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में पहुँचा तब गुरुदेव ने मानो डॉक्टर की सभी सूचनाएँ सुन ली हों उसी तरह मेरे पास शब्दश: उसी तरह का व्यवहार कराया। अगम निगम के औलिया श्री गुरुदेव की लीला अगम्य है।

इस बीमारी के बाद मुझे संसार के सार-असार का ख्याल बराबर आ गया। संसार के रंग-राग, खान-पान और स्त्री के विषय की जो थोड़ी बहुत वासना थी, वह भी धुल गई। मुझे संसार के प्रति उदासीनता आ गई। गुरुदेव ने मेरे मन का मैल धो डाला। मुझे निर्मल बना दिया।

जो छोटे-छोटे मान-अपमानों से भयभीत हो शेखचिल्ली की तरह कल्पित कहानियाँ गढ़ते हैं, बीती बातों की यादों में ही सुलगते रहते हैं, भविष्य के चिंतन में झुलसते रहते हैं, ऐसे मानव तुच्छ माने जाते हैं। ऐसा तुच्छमना मानव अमूल्य वर्तमान को आनंद से वंचित कर देता है और भविष्य को अंधकारमय बना लेता है। यों तो भविष्य मानव-जीवन में कभी भी पदार्पण नहीं करता, यदि वह आना चाहे भी तो वर्तमान का जामा पहनकर ही प्रवेश पा सकता है। जो मानव भूतकाल को स्मरण करके नित्य ही निज को कोसता रहता है, भविष्य के मोह में या सुख-ऐश्वर्य के प्रलोभन में वर्तमान सुख-शांति को खपाता रहता है, संभवत: वह सृष्टि का सर्वथा भाग्यहीन प्राणी ही माना जाएगा।

छिछले मानव-मन की पहचान यह है कि वह तुच्छ विषय-विकारों में लीन हो अपने बहुमूल्य जीवन को काम-क्रोध एवं मोह-लोभ के व्यापारों में खपाता रहता है। मध्यम मन विषय वासनाओं में फिसलता हुआ भी थोड़ा-बहुत बुद्धिगत ज्ञान विचार का आदर करता चलता है। नित्य इन्द्रियों के प्रभाव में प्रवहमान रहता है वह तुच्छमना कहलाता है। जो कभी बुद्धि के पक्ष में तो कभी इन्द्रियों के पक्ष में करवटें बदलता हुआ जी लेता है वह मध्यम-मना कहलाता है। और सदा बुद्धिमत्तापूर्ण विचार एवं ज्ञान को आदर-सम्मान देते हुए संसार के नश्वर परिणामों पर अपना बुद्धिमत्तापूर्ण स्वतंत्र विचार रखता है और अनेकानेक दुर्गुणों का शिकार होने से स्वयं को बचाते चलता है वह अन्तत: अचलमना हो जाता है।

आदमी जब अचलमना हो जाता है तो सफलता उसके चरण चूमने को मचल उठती है। जितने अंश में आदमी अचलमना होता है उतना ही वह समाज का, कुटुम्ब का, देश का और विश्व का हितैषी होता है। संसार की बड़ी-बड़ी खोजें अचलमनाओं के सफलता की ही द्योतक हैं।

*

उज्जैन में कुंभ-मेला

' सेवा ही साधना है...'

महांकाल-नगरी उज्जैन में सिंहस्थ पर्व पर एक विशाल कुंभ-मेले का आयोजन दिनांक १७ अप्रेल से १६ मई १९९२ तक होगा। इस मेले में संपूर्ण भारत के अनेक संत-महात्मा, महन्त, आचार्य-गण, महा-मंडलेश्वर आदि पधारेंगे। कोई-कोई बिरले अज्ञात ब्रह्मज्ञानी महापुरुष भी तीर्थ को पावन कर सकते हैं। देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु-भक्तजन इस पावन पर्व के स्नान, दान, दर्शन एवं सत्संग का लाभ लेने हेतु कुंभ-मेले में आयेंगे।

संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा इस कुंभ-मेले में एक विशाल कुंभ-शिविर (केम्प) का आयोजन किया जायेगा।

आश्रम सिंहस्थ कुंभ-पर्व में विशाल एवं भव्य आयोजन द्वारा सत्संगी भाई-बहनों एवं बाहर से पधारनेवाले अनेक साधुजनों के आवास-भोजनादि की सुचारु व्यवस्था जुटायेगा एवं पू. बापू के सांनिध्य में दिव्य-सत्संग का आयोजन करेगा।

इस भव्य एवं विशाल आयोजन में सहभागी होने के लिए एवं श्री सदगुरुदेव के दैवी-कार्य में सेवा करके अपने तन-मन-जीवन को पावन करने के लिए सेवाधारियों को यह एक स्वर्णीम अवसर मिल रहा है। जिन सेवाधारी भाई-बहनों को इस सुअवसर का लाभ लेना हों वे शीघ्र ही अहमदाबाद आश्रम को सूचित करें।

इस आयोजन में सेवा-कार्य मुख्यतः दो विभागों में बांटे गये हैं :

(१) आयोजन की पूर्व-तैयारियाँ :

इसमें राजगीरी (चुनाई) काम, वेल्डींग, वायरींग, लाईट, माईक, मंडप, डेकोरेशन, मूर्तियों की बनावट, सजावट एवं प्रदर्शन कार्य, कार्यालय, साहित्य-स्थल, रसोई-घर, जल-व्यवस्था, पार्कींग, वाहन-ट्रान्सपोर्ट, खरीदी, पानी-छिड़काव, सफाई इत्यादि कार्यों का समावेश होता है। ये कार्य दि. ५ मार्च से १० अप्रैल की अवधि में करने होंगे।

(२) कुंभ-मेले के दौरान सेवाएँ :

ये सेवाएँ ११ अप्रैल से १८ मई तक चलेंगी।

इनके कार्यक्षेत्र हैं :

रसोईघर, भोजनशाला, सत्संग-मंडप, उतारे की व्यवस्था, चौकी, कार्यालय, व्यवस्था, संत-सेवा, लाईट, पानी, साउन्ड, डेकोरेशन, प्याऊ, वाहन, खरीदी, पार्कींग, पानी-छिड़काव, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, साहित्य-कैसेट स्टोल, साहित्य-वितरण आदि।

१२ वर्षों के एक लम्बे अंतराल के पश्चात् आनेवाले इस पवित्र कुंभ-मेले में पूज्यपाद श्री सदगुरुदेव के कल्याणकारी आयोजन में निष्काम सेवा करके पावन होने का सुअवसर मिलना वास्तव में निष्काम-योग है। इस सेवा-यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए सेवाधारी कृपया निम्नलिखित बातों पर ध्यान देवें :

(१) सेवाधारी नामदान (मंत्र-दीक्षा) लिया होना चाहिये। (२) उसे कम से कम सात दिन के लिए सेवाएं प्रदान करनी होगी। (३) आश्रम द्वारा आयोजित शिविरों एवं सत्संगों में सेवा करने का अनुभव वांछनीय है। (४) सेवाधारी की योग्यताओं का पूर्णतः लाभ लिया जा सके उसी ढंग से उसे सेवा दी जायेगी एवं सेवा-कार्य और स्थान में परिवर्तन नहीं हो सकेगा। (५) सेवाधारी हिन्दी-भाषा समझ एवं बोल सके यह आवश्यक है। (६) आयोजन के दौरान सेवाधारी अपनी सेवा में ही संलग्न रहेगा। अपना कर्त्तव्य छोड़कर इधर-उधर घूमने नहीं जायेगा। (७) सेवाधारियों को आयोजन के दौरान कुंभ शिविर में ही रहना आवश्यक है।

इस सेवायज्ञ में शामिल होने के इच्छुक सेवाधारी शीघ्र ही अपनी दरखास्त भेजें। चयन किये गये सेवाधारियों का एक विशेष ट्रेनींग केम्प जनवरी-फरवरी में आयोजित किया जायेगा। उस समय सेवाधारियों को उनका परिचय-पत्र (IDENTITY-CARD) भी दिया जायेगा।

आपके पत्र में निम्नलिखित जानकारियाँ अवश्य भेजें :

नाम, उपनाम, उम्र, शैक्षणिक योग्यताएँ, व्यावसायिक योग्यताएँ, नामदान (मंत्र-दीक्षा) की तारीख, कितनी शिविरों में भाग लिया है? आश्रम में किस-किस प्रकार की सेवाएँ की हैं? कुंभ-मेले में कौन-सी सेवा करना चाहते हैं? कितने हफ्ते सेवा दे सकेंगे? आदि...

इस विषय पर ब्यौरेवार जानकारी निम्नलिखित पते पर शीघ्र भेजें :

संचालक महोदय, सिंहस्थ कुंभ-पर्व, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५.

संस्था समाचार

जन्माष्टमी

दिनांक २ सितम्बर जन्माष्टमी का पुण्य दिन। दिनांक ३१ अगस्त तथा १ और २ सितम्बर मिलाकर तीन दिन का शक्तिपात साधना शिविर सुरत के आश्रम में हुआ। जन्माष्टमी के दिन तो वैकुण्ठ छोटा पड़ रहा था। सुरत शहर में से, आसपास के गाँवों में से तथा बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली, रतलाम, कोटा और केनेड़ा से भी साधक लोग इस शिविर में भाग लेने आ पहुँचे थे। इस पावन पर्व का आनन्द अनोखा था। सुरत की भाविक भक्त जनता के लिए तो पूज्यश्री का आश्रम हारे हुए, थके हुए और व्यस्त मानव के विश्राम का वटवृक्ष ही है। मनोकामना की पूर्ति करनेवाले कल्पवृक्ष और वटवृक्ष की परिक्रमा करना, जप-मण्डप में जप करना, पावन प्रसाद पाना, सत्साहित्य, आडियो तथा विडियो कैसेट और सबसे अनूठा पूज्यश्री का मंगल दर्शन... यह सब स्वर्ग को भी शर्मिन्दा बनाए ऐसा है।

जन्माष्टमी के दिन केवल सुरत में ही नहीं, सारे गुजरात में या भारतभर में भी न होता हो ऐसा 'मटकी फोड' मक्खन मिसरी का उत्सव पूज्यश्री के मधुर सानिध्य में होता है। ऐसे मधुर पर्व में प्रसाद पाने के लिए भक्तगण लालायित हो यह स्वाभाविक ही है। यह पावन प्रसाद प्राप्त होते ही सारे दिन की तपस्या, उपवास आदि सब सार्थक हो जाता है। उस दिन श्रीकृष्ण-जन्म अवतार-रहस्य विषयक पूज्यश्री का तात्त्विक प्रवचन भी चिन्तनीय रहा।

जन्माष्टमी के बाद पूज्यश्री करीब सात दिन तक सुरत में ठहरे। इस दौरान प्रतिदिन शाम को ४ से ६ बजे तक सत्संग-प्रवचन होता था। कभी-कभी तापी के पावन किनारे पर भी भक्तजनों को गुरुदेव का संग, सत्संग-रंग प्राप्त होता रहा। गुरुदेव की वाणी का एक-एक शब्द अनमोल मोती जैसा है। उनकी अमृतवाणी निराश में साहस भरनेवाली, पतितों को उठानेवाली, मार्ग भूले हुए पथिकों को सच्चा मार्ग बतानेवाली और जीवन में मधुर ईश्वरीय रस का सिंचन करनेवाली होती है। उसमें से कभी आनन्द के झरने प्रस्फुटित होते हैं तो कभी कर्त्तव्य की पगडन्डी की दिशा दिखाई देती है। कभी जीव-ब्रह्म की एकता का भान कराया जाता है तो कभी प्यारे के प्रेम में, विरह में तन-मन की सुध-बुध भुलाई जाती है। पूज्यश्री के सानिध्य में सबका सर्वांगीण विकास होता रहता है।

नासिक कुंभमेले में

१० सितम्बर को पूज्य गुरुदेव सुरत से नासिक पधारे। नासिक के कुंभमेले में हजारों साधु, लाखों सदगृहस्थ तथा भाविक भक्त भारत के कोने-कोने से आते हैं। इस पुण्यपर्व का लाभ लेने के लिए लोग उमंग और उत्साह से सैंकडों हजारों मील दूर से भी पहुँच जाते हैं। पूज्यश्री नासिक पहुँचे तो नासिक के भक्तों की इस पुण्यपर्व के दिनों में उनके पावन दर्शन और सत्संग का लाभ मिला।

पूज्यश्री ने निष्किंचन साधु-संतों को प्रसाद, दक्षिणा दान से सन्तुष्ट किया। वहाँ एक भव्य शोभायात्रा का भी आयोजन हुआ जिसमें भाविकों को पूज्यश्री के दर्शन का लाभ मिला।

मद्रास में दिव्य सत्संग समारोह

पूज्यश्री नासिक से बम्बई होते हुए हवाई मार्ग से मद्रास पधारे। मद्रास में दो दिन रुकने के बाद रामेश्वर, कन्याकुमारी, मदुराई, पोंडीचेरी तथा तिरुपति आदि स्थानों की मुलाकात लेकर दिनांक २६ को पुनः मद्रास पधारे। इस मेट्रोपोलीटन शहर में पूज्यश्री के अनेक साधक-भक्त रहते हैं। दिनांक २७ से २९ सितम्बर तक सिन्धुसदन, होल्स रोड़ तथा एगमोर में पूज्यश्री का सत्संग समारोह रहा। मद्रास के तमील भाषी मारवाड़ी समाज और सिंधी समाज के लोगों ने बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित रहकर लाभ लिया।

दुबई में अमृत-वर्षा

श्री वासुदेव श्रोफ तथा दूसरे भक्तों ने लम्बे समय से दुबई पधारने की मांग रखी थी। दिनांक ८ अक्तूबर

तापी के तीर पर सन्ध्या के आँचल में सत्संग का अमृत बरसे...

सुरत आश्रम में जन्माष्टमी के उत्सव पर विशाल जनमेदनी... श्रीकृष्णनाम-संकीर्तन में भावविभोर भक्तसमुदाय...